

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र

माह- मार्गशीर्ष-पौष, संवत् 2075

दिसम्बर 2018

ओ३म्

अंक 159, मूल्य 10

अग्निदूत

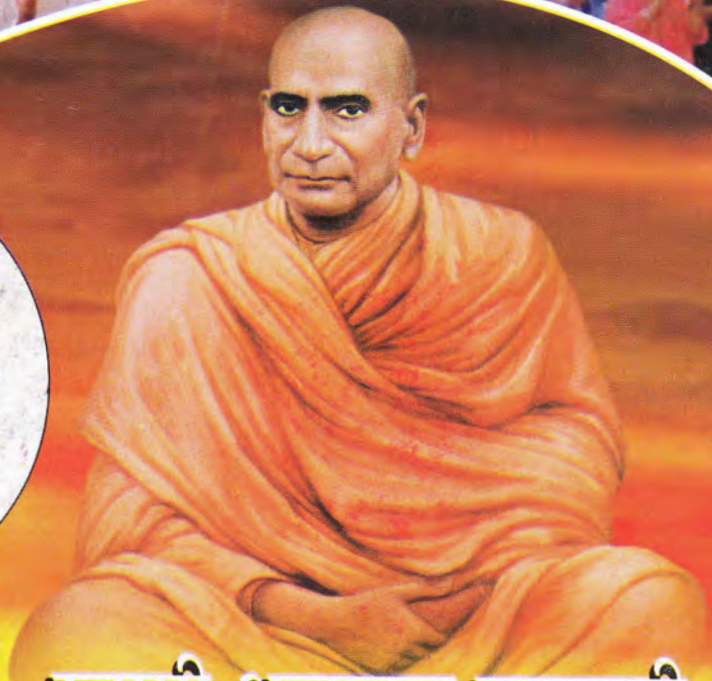
अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)



भाई परमानन्द



पं. रामप्रसाद बिस्मिल



स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

किसी अनागत की प्रतीक्षा में बैठना
मुँह ढांक कर सोने से अच्छा है ।
कल्पना करना, लक्ष्य की ओर बढ़ना
जीवन को बेकार खोने से अच्छा है ॥



दिल्ली में सम्पन्न अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 की झलकियाँ





अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक,
राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७५

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११८

दयानन्दाब्द - १९५

: प्रधान सम्पादक :

आचार्य अंशुदेव आर्य

प्रधान सभा

(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :

आर्य दीनानाथ वर्मा

मंत्री सभा

(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :

श्री चतुर्भुज कुमार आर्य

प्र. कोषाध्यक्ष सभा

(मो. 8370047335)

★

: सम्पादक :

आचार्य कर्मवीर

मो. ८९०३९६८४२४

पेज सज्जक :

श्रीनारायण कौशिक

- कार्यालय पता -

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१

फोन : (०७८८) ४०३०९७२

फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;

e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष - १४, अंक ०५

ओ३म

मास/सन् - दिसम्बर २०१८

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,

महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सावभूतनिश्चयं ।

तदग्निस्त्रैलोक्यस्य दौत्यमेत्य सन्नसन्नकम् ,

समाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ॥

विषय - सूची

पृष्ठ क्र.

१. गड़ा धन दिलाने वाला	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२. सुखमय संसार केवल वैदिक आदर्शों से	आचार्य कर्मवीर	०५
३. वैदिक ज्ञान द्वारा भ्रष्टाचार उन्मूलन	ब्रिगेडियर चितरंजन सावंत	०८
४. कुछ तो उस पर भी छोड़ दें।	ओमप्रकाश बजाज	१०
५. ईश्वर का दयालु स्वरूप : कर्मफल	डॉ. अशोक आर्य	१२
६. स्वामी श्रद्धानन्द की दूरदर्शिता के सुपरिणाम	मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति	१४
७. हे राम	आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक	१७
८. भारतीय जीवन शैली-आधुनिक और प्राचीन	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	२०
९. महर्षि दयानन्द सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के आदर्श उदाहरण	मनमोहन कुमार आर्य	२२
१०. अनन्द कोटि सृष्टि का प्रलय एक साथ होता है या अलग-अलग	ओमप्रकाश आर्य	२५
११. पुण्य स्मरण : परमानन्द	डॉ. भवानीलाल भारतीय	२६
१२. अमर : पं. रामप्रसाद बिस्मिल	जगतशम आर्य	२९
१३. उदर वायु-उदर रोग	दीनानाथ वर्मा	३२
१४. समाचार प्रवाह		३३

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें

Website : <http://www.cgaryapratinidhisabha.com>

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है ।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक - आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा,
दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया ।



गड़ा धन दिलाने वाला



भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

निखातं चिद् यः पुरुषंभृतं वसु, उदिद् वपति दाशुषे ।
वज्री सुशिप्रो हर्यश्व इत् करद्, इन्द्रः ऋत्वा यथा वशत् ॥ ऋग्. ८.६६.४

ऋषिः कलिः प्रागाथः । देवता इन्द्रः । छन्दः पंक्तिः ।

● (यः) जो (पुरुषंभृतं) बहु-अर्जित (निखातं चिद्) गड़े हुए भी (वसु) ऐश्वर्य को (दाशुषे) आत्मदानी के लिए (इत्) निश्चय ही (उद् वपति) बाहर निकाल लाता है, (वह) (वज्री) वज्रधारी (सुशिप्रः) सुमुख, सुन्दर (हर्यश्वः) हरणशील घोड़ोंवाला अर्थात् वेगवान् (इन्द्रः) परमेश्वर (स्तोत्रा को) (ऋत्वा) कर्म से (यथा) जैसा (वशत्) चाहता है (वैसा) (इत्) निश्चय ही (करत्) कर देता है ।

गड़ा हुआ धन किसी काम का नहीं होता, यदि हम उसे प्राप्त न कर सकें। हमें ऐसा सहायक चाहिए जो गड़ा धन हमारे उपयोग के लिए बाहर निकाल सके। वेद कहता है कि परम प्रभु इन्द्र उसके लिए जो दाश्वान् है, गड़ा हुआ धन बाहर निकाल लाते हैं। आप सोचेंगे कि यह तो पहली बुझाई जा रही है। गड़े धन को बाहर निकालने के लिए भला परम प्रभु की क्या आवश्यकता है। आज कल तो ऐसी-ऐसी मशीनें आविष्कृत हो चुकी हैं, जो यह भी पता लगा देती हैं कि गड़ा धन कहां पर है और उसे क्षणभर में बाहर भी निकाल देती है। भाइयों! आपकी शंका ठीक है। यहां प्रधानतः भूमि में गड़ी किसी भौतिक सम्पत्ति के विषय में चर्चा नहीं हो रही है। वैसे तो गड़ी हुई भौतिक सम्पत्ति की प्राप्ति भी प्रभु की कृपा से ही होती है, भले ही उसमें साधन आधुनिक मशीनें बनें। पर यहां तो मुख्यतः वह बहुसंचित आध्यात्मिक सम्पत्ति अभिप्रेत है, जिस पर बाद में साधना छोड़ देने तथा उन्मार्गगामी हो जाने के कारण वासना-रूप कठोर शिलाओं की बहुत-सी परतें जम गई हैं तथा वह सम्पत्ति मानो नीचे दब गई है। उसे पुनः पाने के लिए मनुष्य को दाश्वान् बनाना पड़ता है, प्रभु को आत्म-समर्पण करना होता है। आत्म-समर्पण-कर्ता के लिए प्रभु उस बहु-अर्जित, किन्तु गड़ी हुई, अध्यात्म सम्पदा को क्षणभर में बाहर निकाल लाते हैं, और उसे धनी बना देते हैं। इन्द्र प्रभु वज्री है, वज्रधर हैं, वे अपने शक्ति-रूप-वज्र से अवरोधक वासना-रूप सुदृढ़ शिलाओं को तोड़ने में समर्थ है। वे सुशिप्र है, सुमुख, सुन्दर और सुरम्य है, अतएव भक्त को रिझाने वाले हैं। वे हर्यश्व है, हरणशील घोड़ोंवाले है, अतिशय वेगवान् हैं। अतः वेगपूर्वक दौड़ लगाकर कोई उनकी सीमा से बाहर नहीं निकल सकता। जब उनका यह रूप मनुष्य के सामने आता है, तब सहसा वह उनके प्रति नत हो जाता है, उन्हें आत्म समर्पण कर देता है, दाश्वान् बन जाता है। अपने उस दाश्वान् भक्त को इन्द्र प्रभु जैसा बनाना चाहते हैं, बना देते हैं। वे उसकी शक्ति के अनुरूप उसे तपस्वी, ऋषि, महर्षि, नेता, सम्राट कुछ भी बना सकते हैं। आओ, हम भी इन्द्र प्रभु जैसा चाहें वैसा बनने के लिए उनके हाथों में अपने को सौंपने के लिए तैयार हों।

मन्त्राय-टिप्पणी - १. दाशु दाने, वसु । २. शिप्रे हनू नासिक वा (निरु. ६.१७) शोभने शिप्रे यस्य स सुशिप्रः सुमुखः। ३. वश कान्तौ, लेद । ४. कृ लेद ।

सुखमय संसार केवल वैदिक आदर्शों से

(वेदेश्वरी विजयतां निखिलेष्टदात्री)

आज हर क्षेत्र में वैश्विक परिस्थितियाँ तेजी से बदलती जा रही हैं। जीवन मूल्य निर्धारित होते जा रहे हैं। वैज्ञानिक प्रगति अपनी चरम-सीमा लांघती जा रही है। भौतिक उन्नति के संसाधन दिन-रात जुटाए जा रहे हैं। जिसको जहाँ से भी बन पड़े अधिक से अधिक प्राप्ति के प्रयास निरन्तर बढ़ती की ओर दिखाई दे रहे हैं। दिन-रात इसी प्रयत्न में लगे हैं कि संसार में शान्ति स्थापित हो जाए संसार सुखी बन जाए दुःख और असन्तोष की मात्रा कम हो जाय, उजड़े हुए लोग, उखड़े हुए लोग फिर से बस जाएँ, उपद्रव सब धर्म मजहब जातिवाद, प्रान्तवाद, नक्सलवाद के सारे झगड़े मिट जाएँ और चारों ओर अमन चैन की बंशी बजे। किन्तु ऐसा हो नहीं पा रहा है कारण हम समस्या के वास्तविक समाधान की ओर बढ़ ही नहीं पा रहे हैं, जिससे जीवन में दुःख घटने के बजाय और उब्र रूप से हम उसमें धंसते चले जा रहे हैं।

आप सभी जानते हैं कि आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने “वेदों की ओर लौटो” का नारा दिया था, क्योंकि उन्होंने दुनियाँ के सभी धर्मों के ग्रन्थों को विचारपूर्वक पढ़ने के बाद यही निष्कर्ष निकाला कि मानवीय समस्याओं का सम्पूर्ण समाधान अगर इस धरती में किसी के पास है तो वह सिर्फ वेद है क्योंकि वेद ज्ञान सार्वभौमिक और सार्वकालिक है उसमें किसी वर्ग विशेष के लिए कोई भी बात नहीं कही गई है उसमें पूरे संसार वासी सभी जीवधारियों के सुख एवं कल्याण की चर्चा की गई है। यह सब कहने की जरूरत नहीं रह गई है कि वर्ल्ड लाईब्रेरी की पहली बुक ऋग्वेद है और यही वेद हमारी संस्कृति की अमूल्य निधि है। चारों वेदों के सभी मन्त्र मनुष्य के भौतिक व आध्यात्मिक अभ्युदय देते हैं,

मनुष्य को क्या करना है क्या नहीं करना है। ये सभी बातें वेदों में मिलती हैं। इंसान का चरम लक्ष्य मुक्ति व शान्ति प्राप्त करना है। वेद के मार्ग पर चलकर ही यह सम्भव है। इसके अलावा संसार में दूसरा उपाय नहीं है।

अतः देखने की आवश्यकता है कि वेद में जीवन उपयोगी ऐसे कौन से मूल्य हैं जो व्यक्ति के उत्थान व विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। ऐसा कोई विषय नहीं है जिसके बारे में वेदों में उल्लेख नहीं है जीवन के हर पक्ष पर वैदिक मन्त्रों में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। जिनसे मनुष्य अच्छा जीवन जीने की कला सीखता है तथा संसार को सुखी बनाया जा सकता है। इन भौतिक मूल्यों को किसी देश विशेष अथवा काल की परिधि में नहीं बांधा जा सकता, वे सार्वभौमिक व सार्वकालिक हैं उनका किसी भी धर्म समुदाय से कोई लेना देना नहीं है। वे शाश्वत मानवीय मूल्य हैं जो सृष्टि के आदि से चले आए हैं। कुछ नास्तिक लोग कहते हैं कि वेद तो गड़रियों के गीत हैं उसमें कहाँ नैतिक मूल्यों का स्थान है। जबकि यह कथन सत्य से कोसों दूर है, जितने नैतिक व आध्यात्मिक परक वेद है उतना संसार का कोई ग्रन्थ नहीं। वेद में अनेक उदात्त भावनाएँ हैं वेद के एक-एक मंत्र में वह शक्ति है जिसके अनुशीलन व पालन से पूरा संसार सुखी बन सकता है।

महान वैज्ञानिक सर आइंस्टीन से उनके जीवन के अन्तिम समय पर किसी पत्रकार ने पूछा था - संसार को सुखी बनाने के लिए किस वैज्ञानिक आविष्कार की आवश्यकता है। आइंस्टीन ने कहा - संसार को सुखी बनाने के लिए सिर्फ अच्छे इंसान का होना आवश्यक है। क्योंकि अच्छे इंसान में ही सद्विचार उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए वेद का मानव समाज के लिए सबसे पहला उद्घोष है कि जीवन में इतने ऊँचे उठो कि जितना आकाश में सूर्य है तथा ऋषि मुनियों के पदचिन्हों पर चलकर मननशील व अच्छे इंसान बनो। ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया कि सद्गुणों से ही श्रेष्ठ इंसान बन सकता है वेद मनुष्य की पवित्रता में विश्वास रखते हैं। सदाचार तप, दान और परोपकार उनके आधार स्तंभ हैं। वेद केवल सिद्धान्त में विश्वास नहीं रखते अपितु व्यवहार में भी विश्वास रखते हैं, इसलिए कहा है - **“आचार हीनं न पुनन्ति वेदाः”** अर्थात् जो आचरण से हीन हैं वे वेद पढ़कर भी पवित्र नहीं हो सकते। मन, वचन, कर्म की पवित्रता होना सबसे प्रथम आयाम है। वेदों में बार बार पाप-पुण्य की बात दोहराई गई है। वेदों को मानने वाला ऐसा जीवन जीना चाहता है जिसमें कोई बुराई न हो, अच्छाई ही अच्छाई हो।

इसलिए वेद का एक मन्त्र कहता है -

“विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद् भद्रं तन्न आसुव ।”

अर्थात् हे ईश्वर जितनी भी हमारे अन्दर बुराईयाँ हैं वे हमसे दूर कीजिए और जो अच्छाईयाँ हैं वे हमें प्रदान कीजिए। यह तभी संभव है जब इंसान गलत कार्य न करे किसी का बुरा न सोचे और दूसरों से ऐसा व्यवहार करे जैसा वह चाहता है कि दूसरे उसके साथ करें। वेद उपदेश देता है हम जीवन में गलत मार्ग पर न चलें, रोज कल्याणकारी कार्य करें, हवन करें तथा जरूरतमंद की मदद करें। वेद व्यक्तिगत उन्नति की बात नहीं करता वह सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझने की प्रेरणा देता है। इसलिए वेद में कहा है - **कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समस्त संसार को आर्य बनाओ, सबके कल्याण की बात कही गई है। “सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।”** समाज मनुष्यों से बनता है, यदि समाज में सब ठीक हो, सज्जन हों तो समाज में सुख-शांति बनी रहती है। इसलिए वेद सबकी तरक्की चाहता है वह सभी में एक परमात्मा को देखता है, सबको समान मानता है, वेद कहता है - हम सब मिलकर रहें मिलकर चलें, सब एक तरह से सोचें किसी से भी किसी तरह का मतभेद न हो - **“संगच्छथ्वं संवदथ्वं, संवो मनांसि जानताम्।”** वेद में स्वतन्त्रता समता एवं भ्रातृत्व का उद्घोष किया गया है अच्छे प्रजातन्त्र के लिए ये तीन मूल सिद्धान्त हैं, हमारे संविधान में भी इन तीनों पर जोर दिया गया है। वेद में कहा है जिस प्रकार हमारे शरीर के सारे अंग मिलकर शरीर को चलाते हैं उसी प्रकार समाज के सभी घटकों के तालमेल से समरसता से समाज को सुखी बनाया जा सकता है, उनमें कोई छोटा बड़ा नहीं होता। ऋग्वेद में एक जगह लिखा है - **जो केवल अपना पेट भरता है और उसका पड़ोसी भूखा है ऐसा व्यक्ति पापी है। समाजवाद का इससे बड़ा उदाहरण कोई नहीं दे सकता। एक वेद मंत्र में -**

“अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संपन्ना । जाया पत्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिवाम् ॥”

अर्थात् पुत्र को पिता का अनुव्रती होना चाहिए तथा माँ के समान मनवाला होना चाहिए। पति-पत्नी दोनों का एक दूसरे के साथ मधुर वाणी का प्रयोग करना चाहिए। कितना स्वर्णिम उपदेश है इस मंत्र में भला बच्चे जब माता पिता के अनुगामी हो जाएँ दम्पती परस्पर माधुर्य में रहें तो समाज तो सुखी व स्वर्गोपम अपने आप हो जायेगा। वैमनस्य एवं प्रेम का अभाव ही समाज में कलूष का वातावरण निर्मित करता है। अथर्ववेद में एक जगह **अज्येष्ठासौऽकनिष्ठासः** लिखा अर्थात् इस संसार में सभी एक दूसरे के सहयोग के लिए हैं कोई सदस्य छोटा या बड़ा नहीं है, समता का इससे उदाहरण और क्या होगा? बन्धुओं! हमारा पूरा विश्वास है कि यदि हम संसार को सुखी बनाना चाहते हैं तो हमें वेद मार्ग पर ही चलना होगा क्योंकि उसी से भय, हिंसा, अशान्ति, शोषण, उत्पीड़न का वातावरण खत्म हो सकता है और संसार खुशहाल हो सकता है।

- आचार्य कर्मवीर

वैदिक ज्ञान द्वारा भ्रष्टाचार उन्मूलन

वैचारिक

- ब्रिगेडियर चितरंजन सावंत

सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने वेद ज्ञान मनुष्य मात्र के लिए दिया। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद चार ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किया है। क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य और आंगिया।

अनेक देशों में वेद ज्ञान का प्रचार हुआ किन्तु समय बीतने के साथ साथ अन्य लोगों ने स्थानीय कहानियां मंत्रों पर थोप दी और अंधविश्वास बढ़ाने लगे। इस कारण वेद पढ़ने वाले आर्यों की संख्या कम होने लगी और अनार्य बढ़ने लगी। दूरित बढ़ने लगा, भद्र का लोप होने लगा। शताब्दियों का अंधकार छाया रहा और राक्षस राज करते रहे हैं। प्रकाश के अभाव में न देवता प्रगति कर सके, न मनुष्य। मनुर्भव के लक्ष्य का लोप होने लगा।

कई शताब्दियों बाद आशा की एक किरण अंधेरी सुरंग के उस पार दिखाई दी। टंकारा सन् १८२४ बालक मूलशंकर का जन्म हुआ। उन्होंने वैदिक विधान बनाने का बीड़ा उठाया और विश्व को आर्य बनाने का संकल्प लिया। मानव मात्र को वेद रूपी अमृत पिलाने के लिए घर बार छोड़ कर निकल पड़े। कहीं सफलता मिली, तो कहीं नहीं मिली। राक्षसी षडयंत्र में उन्हें विष पान कराया और सन् १८८३ में दीवाली की शाम उनका जीवन दीप बुझ गया। किन्तु असंख्य अन्य दीपों को प्रज्ज्वलित कर गया। राक्षसों को फिर से देवता बनाने का अभियान चला और अनेक दस्यु बने आर्य। नारा आकाश में गुंज उठा -

आज २०१८ विश्व भर के आर्य तीस देशों में आकर पुनः भारत में एकत्र हैं। किन्तु समस्या हमारे सामने है, जिससे आप हम सभी जूझ रहे हैं, समस्या भ्रष्टाचार रूपी राक्षस की। आज हम विचार कर रहे हैं कि क्या वैदिक विधान द्वारा इस राक्षस को सदा के लिए सुला सकते हैं - वैसे ही जैसे राम ने रावण को और कृष्ण ने कंस को चिर निद्रा दी। हम सभी का विचार है कि यह किया जा सकता

है। एक बार फिर हम दूरित को दूर करेंगे और भद्र को गले लगाएंगे। प्रश्न है कैसे।

भ्रष्ट आचरण का मूल कारण है, और अधिक धन, स्वर्ण की चमक में, धन की चकाचौंध में सब अपनी आंखों की रोशनी खो रहे हैं अच्छे और बुरे में भेद नहीं कर पा रहे हैं। नैतिकता को ताक पर रख दिया है।

पैसे द्वारा ही सत्ता सुख जिन्हें मिला है - वो उस सुख से वंचित होना नहीं चाहते। और पैसा लगाकर और सत्ता ढूंढ रहे हैं और सत्ता के पाने के बाद अधिकसे अधिक पैसे को ढूंढ रहे हैं। इसी कुचक्र में फंसने के बाद उन्हें जीवन मूल्यों से क्या मतलब। देश का धन विदेशी बैंकों में जमा करना, भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा है। जो व्यक्ति इस पर आपत्ति कर सकते हैं वे भी मौन हैं - कोई धृतराष्ट्र समान पुत्र मोह से मौन है तो कोई सरकार के प्रति वफादार करके अपने हाथ कटा बैठा है। इसीलिए, भ्रष्टाचार पनप रहा है। राज कोष से मुद्रा निजी उपयोग के लिए वो लोग निकाल रहे हैं, जिन्हें राज कोष की रक्षा करने का दायित्व दिया गया है। समय के साथ प्रजा निर्बल हो रही है, और राज धर्म कहता है कि यदि प्रजा निर्बल हो रही है तो राज सबल नहीं हो सकता। देश भी पतन की राह पर है। हम धर्म की दुहाई देते हैं किन्तु धर्म का पालन नहीं करते। बड़े बड़े लोग, ऐसी अनैतिक बातों में लिप्त हैं कि वे दूसरों को सीख नहीं दे सकते। यथा राजा तथा प्रजा। आर्थिक स्थिति और बेहतर बनाने के दावे के कुचक्र में फंस कर शासक भ्रष्टाचार के दलदल में और फंसते जा रहे हैं। ये ऐसा कुचक्र है जिसमें अधिक से अधिक लोग फंसते जा रहे हैं - निकलने का मार्ग किसी को पता नहीं। मंत्री और संतरी दोनों ही लूटेरों की भूमिका में राजनीति के रंगमंच पर अपमानित खड़े हैं किन्तु वो अपने आप को और एक दूसरे को सम्मानित करने में जुटे हैं।

विधि विधान पालन :- शताब्दियों से यह कहा जा रहा है कि विधि विधान महिमामय है। कोई व्यक्ति कितना ही महिमा मंडित क्यों न हो, यह विधान से ऊपर नहीं हो सकता। दुर्भाग्य है कि आज अनेक बड़े बड़े मंत्री जो कानून के पंडित हैं वो अपने शब्दों और कर्मों से कानून की धजियाँ उड़ा रहे हैं। क्या ऐसे लोग भ्रष्टाचार पर लगाम लगा सकते हैं?

देश को और राज्य को सबल बनाने के लिए, कानून का उल्लंघन करने वालों को दंड देना आवश्यक होता है। यदि चोर डाकू और कातिलों को मंच पर महिमा मंडित किया जाता है तो उन्हें दंड देने का साहस किसे हो सकता है। यदि देश की मर्यादा का मर्दन किया जाता है तो देश नाश को प्राप्त होता है। यदि सामान्य जन निर्बल होते जाएंगे तो जैसा पहले कहा - शासक वर्ग सबल नहीं हो सकता। यदि सभी जन निर्बल है तो क्या देश सबल हो सकता है।

भ्रष्टाचार रोग है - भयानक रोग है - राज योग है। भ्रष्टाचार रूपी दीमक देश को अंदर ही अंदर चाट कर खोखला कर रहा है। और खोखला राष्ट्र असमय ही काल के गाल में समा सकता है। देश के शत्रु शृंगाल समान उसी घड़ी की प्रतीक्षा में चहुं ओर बैठे हैं।

क्रांतिकारी समाधान :- हर गंभीर समस्या का समाधान क्रांतिकारी होता है। अभी तक हम और आप शारीरिक सुख में अपने को सुखी मान रहे हैं। यह भ्रम है। यदि व्यक्ति और समाज आध्यात्मिक शक्ति को जागृत नहीं करता तब वो मूर्छित अवस्था में रहेगा कि उसे ढोल और नगाड़े भी जगा नहीं सकते। लेकिन हम और आप जो आर्य समाज के लोग हैं वही तो सोते हुए देश को जगाने आए हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में स्वामी दयानन्द ने जगाया- २१वीं शताब्दी में हम और आप दयानन्द के सैनिक देश को जगाने के लिए कटिबद्ध हैं। इसके लिए हमें सार्वजनिक अभियान चलाना है। पहले तो व्यक्ति अपने आप को आध्यात्मिक शक्ति संपन्न होकर कठिनाइयों से जुझने का संकल्प ले और फिर अनेक व्यक्ति मिलकर पूरे समाज को आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाएं और ऊपर उठाएं। लोकमान्य बाल गंगाधर

तिलक ने घर घर में दरवाजों के अंदर मनाए जा रहे गणेशोत्सव को सार्वजनिक रूप दिया। पूरे समाज को एकत्र किया। लाभान्वित हुआ हमारा भारत। उसी प्रकार आज आवश्यकता है कि अनेक व्यक्ति मिलकर पूरे समाज को आध्यात्मिक शक्ति के माध्यम से सबल बनाएं। सोने वालों को जगाएं और संगठन द्वारा नवीन जीवन का संचार करें। संघ शक्ति-संगठन ही अमृत है। आईए हम और आप मिलकर आध्यात्मिक शक्ति और संगठन रूपी बल का अमृत पान करें और भ्रष्टाचार रूपी भयानक राक्षस का अंतिम संस्कार करें।

याद रखिए - वैदिक विधान में कर्म और कर्म फल का महत्त्व है। हम अच्छे कर्म करेंगे तो फल अच्छा होगा। यदि हम बबूल का पेड़ बोते रहे तो फिर आम कहां से खा सकते हैं। इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि आत्म अनुशासन, आध्यात्मिक शक्ति और स्वच्छ जीवन से जन जन को प्रेरणा देते हुए देश को पुनः सन्मार्ग पर चलाएं। इसी में हमारा, आपका, देश का और मानव मात्र की भलाई है।

पता - वी.एस.एम. उपवन, ६०९, सेक्टर-२९,
अरुण विहार, नोएडा-२०१ ३०३

गुरु, गुरु ही होता है। गुरु को सद्गुरु कहने की आवश्यकता नहीं होती, परन्तु क्योंकि कालान्तर में बाजारों में अनेक तथाकथित नकली गुरुओं की भरमार होने से शिष्यों के लिये कठिन हो गया कि कौन सा गुरु असली है और कौन सा गुरु नकली, इसलिए जो सच्चा और असली गुरु होता है और जो गुरु बनने की योग्यता रखता है उसे सद्गुरु की उपाधि दी जाने लगी है।

जीवन-दर्शन कुछ तो उस पर भी छोड़ दें !

- ओमप्रकाश बजाज



हर धर्म में उसे सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी माना जाता है, यह भी सर्वमान्य है कि उसका न्याय बावन तोला पाव रवती पूरा और पक्ता होता है, उसके यहां दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है। उसके न्याय की निष्पक्षता पर भी कोई उंगली नहीं उठाता, यह भी मान्यता है कि उसके यहां राई रत्ती हर बात का, हर काम का, अच्छे बुरे सब का पूरा पूरा लेखा जोखा रखा जाता है, फिर भी हम उसके न्याय की अपेक्षा और प्रतीक्षा न करके स्वयं ही अपने साथ हुए वास्तविक अथवा कल्पित अन्याय का प्रतिकार यहीं और अभी करने पर तूल जाते हैं, इस हेतु स्वयं को एक ऐसे दुष्चक्र में डाल देते हैं जिससे निकल पाना कठिन हो जाता है।

सामान्य सामाजिक एवं न्यायिक मर्यादा के अनुसार भी कानून अपने हाथ में लेना अवांछनीय ही नहीं दण्डनीय माना गया है, न्याय का भार निष्पक्ष हाथों में ही होना चाहिए, वादी अथवा प्रतिवादी स्वयं ही भला न्याय कैसे कर सकते हैं ?

हमारे एक पड़ोसी नित्य प्रातः उच्च स्वर में गाते हैं-

“है छोड़ दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में”

किन्तु जरा जरा सी बात पर अक्सर पास पड़ोस वालों से उलझते हैं, झगड़ते, निपट लेने की धमकी देते रहते हैं वही कथनी और करनी में अन्तर का एक और उदाहरण।

एक परिचित कई महीने बाद मिले, देखा दाढ़ी-मूंछ ही नहीं सिर के बाल भी बढ़ा रखे हैं। अच्छी भली सूरत का सत्यनाश पकर रखा है। पता चला कि संकल्प किया है कि जब तक अपने प्रतिद्वंदी को जेल नहीं भिजवा लेते बाल नहीं बनवायेगे, अब साधु बाबा बने घूमते हैं। अपनी सुलगाई आग में दिन रात सुलगते दहकते रहते हैं,

न्याय-अन्याय का संचालन अपने हाथों में जो ले लिया है।

न्याय-अन्याय भी तो सापेक्षिक शब्द हैं, मेरे लिए जो अन्याय है वह दूसरे पक्ष के लिए न्यायपूर्ण है। न्याय-अन्याय का फैसला तो न्यायालयों में भी उलटता पलटता रहता चलता है, नीचे की अदालत का फैसला ऊपर की अदालत उलट देती है और ऊंची अदालत उसे फिर पलट देती है कौन कह सकता है कि सर्वोच्च न्यायलय का फैसला भी न्यायपूर्ण ही है, सर्वोच्च न्यायलय भी तो स्वयं अपने फैसले बदल देता है। असली न्यायालयों तो केवल सर्वज्ञ परमेश्वर ही हैं।

कहावत है कि उसके यहां देर है अंधेर नहीं है। देर तो हमारे सांसारिक न्यायालयों में भी कुछ कम नहीं लगती। दादा-पड़दा के चलाए हुए मुकदमों-मामलों की पेशियों पोते-पड़पोते भुगतते रहते हैं। इन दुनियावी अदालतों में तो अंधेर होने की संभावना भी रहती है। उसके यहां कम से कम अंधेर होने की बात तो नहीं ही कही जाती। उसके न्याय के उदाहरण तो अपने आसपास स्पष्ट देखने सुनने को आते ही रहते हैं।

मात्र सोच भर कर देखिए कि यदि हम अपने साथ घटित वास्तविक या तथ्याकथित अन्याय का प्रतिकार उसके हाथों में सौंप दें तो हमारा जीवन कितना शान्त सुखमय तनावरहित हो जाएगा, जो ऊर्जा और समय हम बढ़ावा लेने, हिसाब चुकाने, सबक सिखाने की मानसिक ऊहपोह में व्यर्थ गंवाते हैं वह हम सकारात्मक, रचनात्मक, उपयोगी कामों में व्यय कर के अपने जीवन को सार्थक बना सकेंगे।

हमारी अधिकांश दुश्चिंताओं, कुंठाओं, भागदौड़, उठापटक का मुख्य कारण न्यायतुला अपने हाथ में ले लेना है। मजे की बात यह भी है कि हम चाहते तो न्याय हैं, परन्तु फैसला हर हालत में अपने पक्ष में ही चाहते हैं, हर व्यक्ति हर काम के लिए दक्ष तो नहीं हो सकता,

न्याय का काम उसी के हवाले कर देना चाहिए जो इस कार्य में निपुण हो, भला ईश्वर से बड़ा न्यायशील और कौन हो सकता है ?

इसी मुद्दे का ही एक अन्य पहलू जरा सी कोई बात हो जाए हम घबरा जाते हैं, हमारे हाथ पैर फूल जाते हैं, आशंकाओं कुशंकाओं में घिर जाते हैं। नितांत असुरक्षित महसूस करने लगते हैं। अपना आत्मविश्वास खो बैठते हैं

बड़ी आयु वालों के लिए

६५ साल की आयु के बाद इनसे बचना चाहिए-

सीढ़ियां न चढ़ें

चढ़ना ही हो तो रेलिंग को पकड़ कर चढ़ें,

अचानक अपना सिर न घुमाएँ,

शरीर को झुका कर पैर का अंगूठा

छूने का प्रयास न करें,

खड़े होकर पैट/पाजामा

पहनने की गलती न करें,

पैट/पाजामा हमेशा बैठ कर ही पहनें,

लेटे हों तो करवट के बल ही उठें, सीधे न उठें,

पीछे की तरफ (बैकवर्ड्स) कभी न चलें

कमर झुका कर नहीं घुटने झुका कर

भारी वस्तु उठाएँ

बिस्तर से कभी भी एकदम न उठें,

कुछ पल रुक कर उठें,

शौच के लिए जोर न लगाएं,

उसे स्वाभाविक रूप से आने दें।

०००

- ओमप्रकाश बजाज,

पता पो.बा. ५९५, जीपीओ, इंदौर (म.प्र.)

विचलित हो जाते हैं। यह कैसी हमारी निष्ठा है ? कैसी आस्था है ? ईश्वर पर हमारा कैसा विश्वास है ? क्यों नहीं हम स्वयं को उसके सामने समर्पित कर के सब कुछ उस पर छोड़ देते ? एक बार ऐसा करके तो देखिए, विश्वास कीजिए अपनी आंखों से चमत्कार होता देखेंगे।

पता - पोस्ट बाक्स नं. ५९६, जीपीओ, इंदौर

(म.प्र.) ४५२००९

महंगी दुनिया

- विनोद कुमार पण्डा

हो गई दुनिया महंगी देखो बढ़ गया सबका मोल।

लड़के वाले मांगेंगे अब दहेज में देखेंगे॥

★

अब किसी के घर में पैदा बेटी अगर हो जाए।

बाप बेचारा चिंता में ही जीते जी मर जाए॥

★

गुनाह हो गया पैदा करना बेटी जग में प्यारे।

दहेज का कुत्ता हाथी बन गया इस महंगाई के मारे॥

★

बाप का सीना फट जाए जब घर में बजेगा होल।

हो गई दुनिया महंगी देखो बढ़ गया सबका मोल॥

★

धनी तो मरता धन के ऊपर गरीब का बुरा हाल।

मर गए लाखों भूखमरी से जब बिली ना रोटी दाल॥

★

जीवन भर कड़ी धूप में करके मेहनत और मजदूरी।

कर ना पाए अपने घर की सारी जरूरत पूरी॥

★

ऐसे कई लाचार शख्स ने पीया जहर का घोल।

हो गई दुनिया महंगी देखो बढ़ गया सबका मोल॥

★

घर का चुल्हा जले अब कैसे गैस भी हो गई महंगी।

नेताओं की बल्ले-बल्ले जनता हो गई तंगी॥

★

महंगी भिंडी महंगा आलू महंगे बैंगन प्याज।

इतनी महंगी हो गई दुनिया मूल से महंगा ब्याज॥

★

गरीब की सुनी थाली देख, नेता अब तो आंखें खोल।

हो गई दुनिया महंगी देखो बढ़ गया सबका मोल॥

पता : पु. कंठीपाली (बरमकेला), बिला-रायगढ़ (छ.प्र.)



दयालु ईश्वर ने जीव को कर्म करने में स्वतन्त्र बनाया है तथा फल भोगने के लिए उसे अपनी व्यवस्था के आधीन रखा है। कर्म का यह सिद्धान्त एक दार्शनिक व्यवस्था के अधीन करता है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत प्रभु ने जीव को कर्म करने के लिए पूर्णतया स्वतन्त्र रखा है। किये गये कर्म का फल क्योंकि कर्म पर ही आधारित होता है, अतः फल पाने के लिये वह अपने कर्म के ही आश्रित रहता है। यहां यह भी समझ लेना चाहिये कि अपने किये कर्म के फल पर तो जीव आश्रित है किन्तु इस फल को देने वाला ईश्वर है, जो एक जीव के द्वारा किये कर्मों के अनुपात से ही फल देता है, न तो वह न्यून अथवा न ही अधिक फल देता है।

ईश्वर दयालु है :

एक ओर तो ईश्वर को हम दयालु कह रहे हैं तथा एक हम कहते हैं कि वह किये हुए कर्मों का फल भी देता है। यदि कर्म अच्छे नहीं हैं तो उनके अनुरूप वह दण्ड भी देता है। दण्ड देकर रुलाने वाले को दयालु कैसे कहा जा सकता है? यदि हम किसी भी देश की न्याय व्यवस्था को देखें तो हम पाते हैं कि वही राज्य सुखी है तथा सही रूप से कार्य करता है, जिसकी न्याय व्यवस्था कठोर होती है। यदि न्याय व्यवस्था कमजोर हो, किये गए अपराध का कठोर दण्ड न दिया जावे तो लोग दुष्ट हो जावेगे तथा प्रतिक्षण दुराचार व मारकाट करते रहेगे। सब ओर अन्याय व अत्याचार बढ़ जायेगा। यही व्यवस्था सृष्टि व्यवस्था में भी होती है। किये गये कर्म के तदनु रूप फल ही उसकी दयालुता है। यह फल ही है, जिसके भय से हम बुरे कर्म करने से बचते हैं। यदि किये कर्म का तदनु रूप फल न मिले तो हम अंकुश रहित होकर मन माने ढंग से बुरे कर्म कर अपने स्वार्थ की सिद्धि में लगे रहेगे। अतः किये गए कर्म के अनुसार ही फल देना ईश्वर की न केवल दयालुता ही है बल्कि यह उसकी न्याय प्रियता भी है।

ईश्वर न्यायकारी है :

जब प्रभु की दयालुता को हम देख रहे होते हैं तो साथ ही साथ हमें उसके न्यायकारी स्वरूप के भी दर्शन हो जाते हैं। न्यायकारी वह ही हो सकता है, जो बिना किसी भेदभाव के यथोचित न्याय करे। कर्मानुसार फल दे। कर्म से न तो न्यून दण्ड दे तथा न ही अधिक। यदि वह दण्ड देते समय कहीं कोई चूक कर देता है, जिससे कुछ न्यून व अधिक फल दे देता है तो उसे न्यायकारी कैसे कहेंगे? किसी दुकानदार को पैसा तो एक दिया जावे किन्तु प्रतिफल में वह दस पैसे की वस्तु दे देवे, ऐसे दुकानदार को तो न केवल सदा हानि ही उठानी होगी अपितु उसकी ख्याति को भी धक्का लगेगा। जब किसी के हित का ध्यान रखा जाता है तो उसे दया कहते हैं, किन्तु जब यथायोग्य फल दिया जाता है तो उसे न्याय कहते हैं। ईश्वर न्यायकारी है, क्योंकि वह यथायोग्य फल अथवा दण्ड देता है। इससे जीव का भी हित होता है। वह भविष्य में बुरे कर्म करने से बचेगा। उसे पता है कि यदि वह पुरे कर्म करेगा तो उसे दण्डित होना होगा तो वह बुरे कर्म करने से बचेगा तथा उसे पता होगा कि अच्छे कर्म करने से उसे प्रमादि नहीं पुरुषार्थी कहा जावेगा तथा उसका अच्छा फल देकर उसे लाभान्वित भी किया जावेगा तो वह अच्छे कर्म ही करेगा बुराई की ओर कभी नहीं बटेगा।

किये गए कर्म का कितना फल मिलना चाहिये इसकी ठीक ठीक गणना ही न्याय कहा जा सकता है। इसमें ही जीव का हित भी है। यही ही ईश्वर की जीव के लिए दया भी है। न्यायाधीश जानता है कि वह यदि दया भाव से दण्ड नहीं देगा तो उससे जीव का अहित होगा। जब उसके कारण जीव का अहित होता है तो वह उसका दया भाव न होकर निर्दयता बन जावेगा। इस लिए वह दयालु ईश्वर सदा किये गए कर्मों का तदनुसार दण्ड देकर

या फल देकर न केवल न्यायकारी ही होता है। अपितु दयालु भी होता है।

ईश्वर के न्याय स्वरूप मिलने वाला दुःख अथवा सब कुछ भी हो वह जीव के लिए हितकारी व प्रेरणादायी होता है। जब बुरे कर्म का बुरा फल मिलता है तो उसे प्रेरणा मिलती है कि भविष्य में बुरा कर्म न करें अन्यथा दण्डित होना होगा। अच्छे कर्म का जब उत्तम फल मिलता है तो उसका उत्साह लाभ प्राप्ति के लिए अच्छे कर्म करने की ओर बढ़ता है।

मानव जीवन में सुख और दुःख कर्म फल का ही परिणाम है। यह ठीक है कि मानव जीवन में सुख व दुःख उसके कर्मों के परिणाम से ही आते हैं, किन्तु जब तक नहीं आता तब तक हमें सुख का ठीक से आभास नहीं हो पाता। जब तक हम एक ही अवस्था में होते हैं तब तक दूसरी अवस्था का ज्ञान कैसे हो सकता है? यह दुःख ही है, जिसके आने पर हमें पता चलता है कि सुख इससे कहीं अच्छा था। यदि हमने दुःख का कभी सामना ही नहीं किया तो इसके दूसरी ओर क्या है (इसका हमें पता कैसे चल सकता है? जब तक हम सिक्के के पलट कर नहीं देखते तब तक हम कैसे बोल सकते हैं कि इसके दूसरी ओर क्या है? वास्तव में कवि ने यह अमिष्ट ही कहा है कि 'दुःख के बिना नहीं सुख की गिनती, बुझते दीप जलाने वाला।'

अनेक लोग सुख व दुःख में भेद ही नहीं कर पाते। वह सुखी जीवन में भी रोते रहते हैं। प्रभु को दोष देते रहते हैं। दुःख तो देखा ही नहीं होता, इस कारण क्षणिक कमी को दुःख समझ कर रोने चिल्लाने लगते हैं। वह सीमित सुख को ही दुःख समझ बैठते हैं। ऐसे व्यक्ति को जब कभी दुःख आता है तो वह बुरी तरह से घबरा (भयभीत) जाता है। वह इसे भयंकर विपत्ती समझ बैठते हैं। उन्हें इससे निकलने का मार्ग दिखाई ही नहीं देता। वह नहीं जानते कि यह ही वह मार्ग है जिससे सुख की सत्यता का आभास होता है। अन्यथा पता ही न चले कि सुख क्या है।

मुष्य कभी स्वस्थ होता है तथा कभी रुग्ण भी हो जाता है। यह ठक है कि रोग आने से उसे क्षणिक कष्ट होता है। अनेक बार वह रोग ग्रस्त अवस्था में इतना दुःखी

हो जाता है कि वह रोने व चिल्लाने भी लगता है। इससे उसका दुःख तो कम नहीं होता किन्तु कष्ट में कुछ वृद्धि ही होती है, साथ ही उसके आश्रित भी उसकी इस अवस्था को देखकर दुःखी हो उठते हैं। वह नहीं जानता कि दुःख के बिना सुख का पता ही नहीं चलता। इतना ही नहीं यह रोग मानव को स्वस्थ रखने का साधन भी है। जब हमें कोई रोग हतो है तो हमारा शरीर तत्काल रोग का प्रतिरोध आरम्भ कर देता है। इस प्रकार शरीर के अन्दर एक संघर्ष आरम्भ होता है। जिसे कष्ट है, वह भी शरीर के अन्दर चल रहे इस संघर्ष से अनभिज्ञ होता है किन्तु रोग को भगाने के लिए हो रहे इस संघर्ष में स्वास्थ्य विजयी होता है तो स्पष्ट है कि हमारे शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ गई है। इस क्षमता के बढ़ने से अब शरीर में ऐसी क्षमता आ जाती है, जिसके होते हुए रोग पुनः जल्दी से शरीर में प्रवेश करने का साहस नहीं कर सकता।

कुछ ऐसी ही अवस्था सुख व दुःख की होती है। दुःख के आने से ही सुख की प्रतीति होती है। एक बार दुःख का सामना करने से पता चलता है कि इस दुःख से तो सीमित सुख ही अच्छा है। अधिक सुख नहीं आता तो भी उत्तम है। अतः जिस प्रकार रोग के बिना न तो ठीक से स्वास्थ्य का ही पता चलता है तथा न ही शरीर में प्रतिरोधक शक्ति आ पाती है। इस प्रकार ही दुःख आने पर ही हमें सुख का पता चलता है, उसकी कीमत हम ठीक से लगा पाते हैं। अन्यथा हम सुख को भी कोई महत्व न दें। ठीक इसके अनुरूप ही अच्छे व बुरे कर्म हैं। जब तक हम बुरे कर्मों का फल नहीं प्राप्त करते तब तक हमें अच्छे कर्मों का फल का ठीक से आभास नहीं हो पाता। अतः अच्छे व बुरे कर्म भी अन्योन्याश्रित होते हैं। बस हमें दोनों में भेद कर बुरे से बचना है तथा अच्छा करना है। यही कल्याण का साधन है, सुख सम्पत्ति प्राप्ति का साधन है, सफलता का रहस्य है। अतः जीवन में दुःखों से बचने के लिए जीव को सदा अच्छे कर्म करने चाहिये।

पता : १०४, शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी, जिला-
गाजियाबाद (उ.प्र.)



२३ दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष

स्वामी श्रद्धानन्द की दूरदर्शिता के सुपरिणाम

- मनुदेव 'अभय', विद्यावाचस्पति, एम.ए.

एक बार एक दार्शनिक एक तिपाई को बड़े ध्यानपूर्वक देख रहा था। उस तिपाई (तीन टांग वाली) के ऊपर जल से भरा हुआ एक कलश शोभायमान हो रहा था। वह दार्शनिक उस तिपाई की ओर टकटकी लगाये हुए यह खोज में था कि इसकी कौन सी टांग छोटी है अथवा अथवा वक्र (टेढ़ी) है। वह घंटो उस तिपाई को निहारता रहा कि ये तीन टांगें न केवल समान हैं, अपितु इनके ऊपर रखा पटिया सी समतल चिकना और मजबूत है, यही कारण है कि ऊपर रखा हुआ कलश भी सुन्दर दिखाई दे रहा है। हमारे सुधी पाठक अब समझ गये होंगे कि इस राष्ट्र की त्रिविधियों ने इस राष्ट्र को ऊंचा उठाने में अपने स्तर पर प्रयास तथा त्यागमय वृत्ति के द्वारा अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। वे भारतीय इतिहास के उज्ज्वल नक्षत्र हैं स्वामी श्रद्धानन्द, सरदार पटेल एवं डॉ. अम्बेडकर।

महात्मा मुंशीराम अर्थात् स्वामी श्रद्धानन्द ने वर्ष प्रतिपदा संवत् १९५९ तदनुसार २ जनवरी १९०२ को पर्वतों की उपत्यकाओं से घिरे गंगा किनारे कांगड़ी ग्राम में यह गुरुकुल अपने दो पुत्रों हरिश्चन्द्र तथा इन्द्रजी को लेकर प्रारम्भ किया। कदम बढ़ते गये, कारवां बनता गया। संन्यासाश्रम में प्रवेश करने के पश्चात् वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। जामा मस्जिद की गुम्बद से दिल्ली के समस्त मुसलमानों के अनुरोध पर उन्होंने वेद मंत्र बोलकर विश्व बन्धुत्व होने की, विश्व मित्र होने की घोषणा की। जालियांवाला बाग के बाद कांग्रेस का अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनकर हिन्दी में राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सौहार्द्रता तथा छुआछूत और उंच-नीच की भावनाएं समाप्त करने का सन्देश कांग्रेस के मन्त्र से दिया। स्वामी श्रद्धानन्द की बढ़ती लोकप्रियता और सफल नेतृत्व तथा कथित 'महात्मा' को फूटी आंख न आया। अपने व्यक्तित्व को

उभारने के लिए भूमिका उस समय बन गई जब कोकोनाथ कांग्रेस अधिवेशन में तत्कालीन छः करोड़ अछूतों में से आधे अर्थात् तीन करोड़ अस्पृश्य वर्ग के लोगों को धर्म परिवर्तन कर मुसलमान बनाने का प्रस्ताव धूर्त मुसलमान मौलवी ने रखा। उस समय कथित 'महात्मा' मुस्लिम तुष्टिकरण की इच्छाओं के कारण मौन रहे। गांधी जी की इस भूमिका से स्वामी श्रद्धानन्द के हृदय को गहरी ठेस पहुंची तथा उन्होंने अधिवेशन का बहिष्कार कर कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया। हमारे भोले भण्डारी गांधी जी यह रोड़ा हटाना ही चाहते थे, ताकि कांग्रेस में उनकी गहरी पैठ और मुस्लिमों में लोकप्रियता बढ़े। जबकि इसके ठीक विपरीत मौ. शौकतअली और मो. मोहम्मद अली महात्मा जी को हिन्दुओं का प्रतिनिधि मानकर इनसे मन ही मन घृणा करते थे। इस देश का दुर्देव ही कहा जा सकता है, जबकि गांधी जी को मित्र और शत्रु की सूझ समाप्त हो गई थी।

महात्मा बनने की राम कहानी

ह=हिन्दु, म=मुसलमान = हम (स्वामी श्रद्धानन्द)

इस तथ्य को स्वीकार करने में दो मत नहीं हो सकते कि श्री मोहनदास करमचन्द गांधी 'महात्मा' कोटि के थे। गांधी जी ने प्रार्थना प्रवचनों में कई बार स्वीकार किया कि वे वैदिक महात्मा नहीं अपितु सनातनी पौराणिक महात्मा हैं। यह महात्मा उपाधि भी अमर हुतात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर गांधी जी को अपना छोटा भाई मानते हुए अभिनन्दन समारोह में भेंट स्वरूप प्रदान की थी। गांधी जी को यह प्रत्यय नहीं अपितु उपसर्ग इतना भाया कि महात्मा और गांधी जी एक दूसरे के लिए पर्याय बन गये। उपाधि मिली आर्यसमाज के गुरुकुल से किन्तु वे सनातनी (पौराणिक) महात्मा बनकर विश्व विख्यात हो गये। इस महात्मा शब्द को वे आजीवन सीने से चिपकाये रहे और संसार उनकी पूजा करता रहा।

गांधी जी में लोकेषणा अधिक थी वे ईर्ष्या के कारण अन्य को अपने से बड़ा देखना नहीं चाहते थे।

कांग्रेस से हटकर स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दू महासभा से जुड़े, परन्तु शुद्धि आन्दोलन का प्रारम्भ करने, मेब और जाटों को जो कि मुस्लिम बन गये थे, शुद्ध कर पुनः हिन्दू जाति में मिलाने का आन्दोलन चलाने हेतु शुद्धि सभा स्थापित की। काश! स्वामी श्रद्धानन्द पंजाब-हरियाणा में यह शुद्धि आन्दोलन नहीं चलाते तो सन् १९४७ में भारत-विभाजन के समय विशाल पंजाब की क्या स्थिति होती, इसकी कल्पना करते ही शरीर में सिहरन या कंपकंपी आ जाती है। इस शुद्धि आन्दोलन में 'महात्मा' जी को बड़ी पीड़ा होने लगी और वे 'हरिजन' पत्रिका में उनके विरुद्ध विष उगलने लगे।

इसी प्रकार जाति-पाति के बखेड़े के विरुद्ध आन्दोलन कर समाज में समरसता तथा एकता दिखाई देने की दृष्टि में भी उन्होंने बड़ा कार्य किया। आज भी इन दोनों आन्दोलनों की बहुत आवश्यकता है। इसीलिए हमारी यह ध्रुव धारणा ठीक है कि स्वामी श्रद्धानन्द महान देशभक्त तथा दूरदर्शी महान विभूति थे।

सरदार वल्लभभाई पटेल भारतमाता के वीर महान सपूत थे, जिन्होंने अपनी दूरदर्शितापूर्ण दृष्टि से देश की अविस्मरणीय सेवा की। वे महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज, वैदिक धर्म तथा स्वामी श्रद्धानन्द के कार्यों से भलीभांति परिचित होकर (गुजरात) में जन्मे वल्लभभाई पटेल अपने व्यक्तित्व आदर्श एवं देश भक्ति के गुणों के कारण कांग्रेस में सरदार माने जाते थे। वे वास्तव में सर अर्थात् बुद्धि-मस्तिष्क धारक तथा तथ्यधारक धारणा रखने वाले थे। उनके साथ ही कथित 'महात्मा' जी ने उपेक्षा तथा पक्षपात का व्यवहार किया। कांग्रेस की सम्पूर्ण कार्यकारिणी सरदार वल्लभभाई पटेल को स्वतंत्र देश का प्रधानमंत्री बनाना चाहती थी। किन्तु शायद यह देश का दुर्भाग्य था कि महात्मा जी ने किसी की नहीं सुनी और अपनी हठवादिता के आधार पर उन्होंने श्री जवाहरलाल नेहरू को प्रधानमंत्री तथा सरदार वल्लभभाई पटेल को गृहमंत्री घोषित कर दिया। उल्लेखनीय है कि श्री जवाहरलाल नेहरू ने स्वयं अपने व्यक्तित्व का

परिचय इस प्रकार दिया है-

“मैं संस्कारों से मुसलमान, शिक्षा में अंग्रेज तथा जन्म से कश्मीरी हूँ। मैं दैवयोग से, जहां मैं विवश था, हिन्दू-ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न हुआ हूँ। मैं पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित होने के नाते ईश्वर में कोई आस्था नहीं रखता।

यह सारा परिवर्तन सरदार पटेल स्वयं अपनी आंखों से देख रहे थे। किन्तु देश की तत्कालीन गंभीर अवस्था (देश विभाजन) तथा गांधी जी के प्रति श्रद्धा रखने के कारण उन्होंने देश हित में गृहमंत्री पद को उत्साहपूर्वक स्वीकार किया। हमारी ये मान्यता है कि परमात्मा जो कुछ करता है, वह ठीक ही करता है। उसके यहां न देर है और न अंधेरा है। वह अहैतुक कृपा की वर्षा करता रहता है। यह ऐतिहासिक सत्य है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश को ५५२ रियासतों की एक तिरंगे झण्डे के नीचे लाकर दृढ़ भारत बनाने का काम सरदार पटेल सरीखे ही कर सकते थे। हैदराबाद का नवाब अपनी आदत के अनुसार पाकिस्तान में सम्मिलित होना चाहता था, परन्तु शादिन की ताकत में वह सरदार के सम्मुख झुक गया और भारत में सम्मिलित हो गया। इसे देख कई नवाबों ने आत्मसमर्पण कर दिया।

इसके पूर्व सन् १९३९ में आर्यसमाज ने नागरिक अधिकारों, धार्मिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक समरसता को प्राप्त करने के लिए हैदराबाद के निजाम को पहिले ही औंधा कर दिया था। इसीलिए सरदार पटेल ने उसके ठीक ८ वर्ष पश्चात् ठीक ही कहा था- यदि आर्यसमाज ने इस नवाब को अपनी शक्ति के सम्मुख समर्पण करने के लिए बाध्य नहीं करता तो मेरा यह ढाई दिवसीय विजय अभियान सफल नहीं होता। इस विजय का सम्पूर्ण श्रेय आर्यसमाज तथा तत्कालीन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली को है। इस प्रकार सरदार वल्लभभाई भारतीय इतिहास में सदैव अमर बने रहेंगे। उनकी दूरदर्शिता ने राष्ट्र को एक नई ऊर्जा प्रदान की।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के बौद्धिक और सामाजिक विकास में आर्य महापुरुषों, सत्यार्थ प्रकाश तथा महर्षि दयानन्द के विचारों का महत्वपूर्ण संबंध है। यह स्मरण रखने योग्य तथ्य है कि जब डॉ. भीमराव अम्बेडकर

बड़ौदा में प्रशासनिक अधिकारी बनकर आये, तब उन्हें किसी ने भी किराये से कमरा नहीं दिया। वे अपने कार्यालय के ही एक कक्ष में रहने लगे।

उन दिनों बड़ौदा में महाराज गायकवाड़ द्वारा आमंत्रित पंजाब के ला. आत्माराम अमृतसरी प्रभावशाली व्यक्ति थे। संयोग से उनकी भेंट डॉ. भीमराव अम्बेडकर से हो गई। श्री अम्बेडकर जी ने अपने भोजन तथा आवास की समस्या श्री आत्माराम को बताई। श्री अमृतसरी जी महर्षि दयानन्द, वैदिक धर्म तथा आर्यसाज के अनुयायी थे। वे बड़ौदा के तीनों मानसिक प्रवृत्ति तथा धर्म से परिचित थे। उन्होंने अपनी दूरदर्शिता पूर्ण दृष्टि से सारी स्थिति को भांप लिया। इस युवक भीमराव को अपने घर ले गए तथा परिवार का सदस्य मानकर उन्हें प्रारंभिक चिंताओं से मुक्त रखा। ला. अमृतसरी के यहां भोजन-निवास करते हुए वे सत्यार्थ प्रकाश महर्षि दयानन्द तथा समाज सुधार के कार्यों से परिचित हुए। आर्यसमाज के अनुयायी ला. आत्माराम के आदर्शजीवन, धर्म निष्ठा, कर्मठता से डॉ. भीमराव बड़े प्रभावित हुए। वैदिक साहित्य पढ़ने, समझने तथा मनन करने के पश्चात् उनका दृष्टिकोण आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द के प्रति अत्यन्त श्रद्धापूर्ण हो गया। हिन्दुओं के पौराणिक दृष्टिकोण तथा छुआछूत के विचारों से पूर्ण असहमति रखते हुए उन्होंने पौराणिक हिन्दू धर्म के विरुद्ध बगावत नहीं की। हाँ, उन्होंने एक बार यह घोषणा अवश्य की थी - मैं यद्यपि हिन्दू जाति में उत्पन्न हुआ हूँ परन्तु मैं मरते समय अ-हिन्दू रहूंगा। यह घोषणा सत्य सिद्ध हुई।

डॉ. अम्बेडकर की यह ध्रुव धारणा थी कि उत्तर वैदिक काल के अंतिम वर्षों तथा कौरव-पाण्डव के पारिवारिक युद्ध जिसे महाभारत कहा जाता है, के पश्चात् ही इस विशाल आर्य हिन्दू समाज में विकृति आई। इस मध्य युग में ही अनेक पुराण स्मृति तथा गल्प कथाएं प्रचलित की गई कि समाज को उच्च श्रेष्ठ वर्ग अपने को छोड़कर अन्य वर्ण विशेषकर शुद्ध वर्ण तथा स्त्रियों को नरक के द्वार तक कहा है ऐसे आचार्य यह भूल गये कि जिसे जननी मातृशक्ति नारी को हेय बता रहे हैं। उनकी उत्पत्ति भी उसी नारी जाति से हुई है, कैसी कृतज्ञता है यह।

आर्यसमाज के आन्दोलन के द्वारा मध्ययुगीन अनेक मान्यताओं तथा मध्य अरब में उत्पन्न सम्प्रदायों के संबंध में जनसाधारण को जागृत किया। डॉ. अम्बेडकर यह स्वीकार करते थे कि जो मजहब सम्प्रदाय धर्म के नाम विदेशी तीर्थों के प्रति आसक्ति प्रकट करता है, यह राष्ट्र भक्ति तथा निष्ठा की परिधि में नहीं आ सकता। एक ऐसे विवाद या समस्या है कि डॉ. अम्बेडकर, बौद्धमत को ही क्यों अपनाया, जबकि भारत में इसका अस्तित्व यत्र-तत्र मिलता है। यह सन्तोष का विषय है कि डॉ. अम्बेडकर आजीवन राष्ट्र भक्त, भारत तथा भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठावान बने रहे। नीतिकार के अनुसार यदि वृहत्तर सत्य की रक्षा के लिए अल्प सत्य की उपेक्षा कर दी जाय तो यह क्षम्य है।

स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान के अवसर पर हमें यह दृढ़ संकल्प करना होगा कि हमें अपना प्रत्येक कार्य दूरदर्शितापूर्ण रख कर ही करना चाहिए। हमारे शास्त्रों में कृतज्ञता को अक्षम्य अपराध माना है, इसलिए प्रायश्चित्त की भी व्यवस्था नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस दूरदर्शिता से शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ किया था, उसका सुपरिणाम हमें हमारे पूर्वजों की भूल के कारण देश-विभाजन के समय देखने को मिली। स्वामी जी के इस गुण को सरदार वल्लभभाई पटेल तथा डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने ठीक-ठीक जाना तथा देश हित के उचित कार्यकर राष्ट्र भक्ति का परिचय दिया। इस अवसर पर इन तीनों दिवंगतों को हमारा प्रणाम।

पता : अ/१३, सुदामा नगर, इन्दार (म.प्र.)

**ईश्वर कभी अवतार नहीं लेता
और न ही कभी ले सकता है,
क्योंकि वह परमात्मा सर्वव्यापक
है अर्थात् वह ब्रह्माण्ड में सब
स्थान में कण-कण में
व्यापक है।**

दूरदर्शन पर सर्वोच्च न्यायालय (?) के उस निर्णय, जिसमें विवाहेतर सम्बन्ध (व्याभिचार) को अपराध मुक्त घोषित किया है, का हृदय विदारक समाचार सुनकर दंग रह गया। तभी से बेचैनी रही कि कहीं इस देश को नष्ट करने के

पीछे कोई घातक षड्यन्त्र तो नहीं चल रहा है, जिसने न्यायालय, संसद, मीडिया सभी को अपने जाल में फंसा रखा है। कभी लिव इन रिलेशन, कभी समलैंगिकता, तो अब यह धूर्ततापूर्ण निर्णय। उधर संसद द्वारा कभी शाहबानों तो कभी एस/एसटी एक्ट पर किये फैसले, कभी गो आदि पशुओं की निर्मम हत्या, तो कहीं भारतीय इतिहास व वेदादि शास्त्रों को अपनों ही द्वारा भर्त्सना।

अहो ! यह कैसी स्वतन्त्रता है, जहां प्रत्येक आदर्श का दम घोंटा जा रहा है, हर न्यायसंगत बात को आसानी से भी निकृष्ट कानूनों द्वारा कुचला जा रहा है, जाति व सम्प्रदाय के नाम पर शासकीय व सामाजिक भेदभाव (आरक्षण व छुआछूत) के द्वारा समाज को नष्ट किया जा रहा है। महिला-पुरुष, माता-पिता व सन्तान, निर्धन-धनी, शहरी व ग्रामीण, सबके बीच खाई खोद कर सामाजिक ढांचे को छिन्न-भिन्न किया जा रहा है। इधर कोर्ट लगातार ब्रह्मचर्य व सदाचार की गौरवशाली परम्पराओं को एक-एक करके जीवित जला रहा है।

हे राम ! आप तो मर्यादा पुरुषोत्तम एवं वेदवेदांग विज्ञान के महान् ज्ञाता भगवत्स्वरूप थे, परमपिता परमात्मा की पावन गोद में सदैव रमण करने वाले सम्पूर्ण प्राणी-जगत् के परिचालक व रक्षक थे। आपने उस समय के दृष्ट रावण, जो वर्तमान नेताओं, न्यायधीशों व अन्य कथित प्रबुद्धजनों व कथित राष्ट्रभक्तों से सैकड़ों गुणा श्रेष्ठ था, तथा उसकी बहिन शूर्पनखा को उनकी स्वच्छन्द कामुक



प्रवृत्ति के लिए दण्ड दिया था, परन्तु आज हे राम ! आपके इस अभाग्य राष्ट्र में त्रेतायुग के राक्षसों से कई गुने भयंकर व कामी राक्षसों का निर्लज्ज ताण्डव हो रहा है।

आज द्वार के दुःशासन, दुर्योधन व कर्ण की चौकड़ी द्वारा पतिव्रता रजस्वला धर्मराज युधिष्ठिर की धर्मपत्नी (केवल धर्मराज की, न कि पांचो पाण्डवों की) महारानी द्रौपदी का चीरहण हुआ था परन्तु आज तो सब ओर यह चौकड़ी कुण्डली मारे दिखाई दे रही है। उस समय तो एक व्यक्ति तो था, जो उन्हें तथा उस समय मूकदर्शक बने महापुरुषों बने महापुरुषों को धिक्कार रहा था। आज वो ऐसा महात्मा विदुर भी नहीं दिखाई दे रहा। कोई चौकड़ी के सदस्य हैं, तो कोई धृतराष्ट्र, तो कुछ एक भीष्म, द्रोण व कृपाचार्य के समान विवश है।

उस समय तो वैदिक धर्म के महान् संरक्षक योगेश्वर भगवत्पाद श्रीकृष्ण ने दुष्ट जनों को दण्ड दिया था, परन्तु आज वे कृष्ण भी तो कहीं नहीं हैं। आज तो उन योगेश्वर को भी उनके ही नादान भक्तों के द्वारा कन्याओं के साथ नचाया व रास रचाया जा रहा है, उन्हें भी राधा का प्रेमी व गोपियों के साथ यौनाचार करने वाला बताया जा रहा है।

हे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ! तपस्वी महामना शम्बूक वध व गर्भवती देवी सीता जी को घर से निकालने का मिथ्या दोष तो आप पर भी आपके के नादान ही नादान भक्तों ने मढ़ दिये, परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण, भगवान् शिव,

देवराज इन्द्र, भगवान् ब्रह्मा आदि पूज्य भगवन्तो का चरित्र हनन तो घृणास्पद स्तर तक इनके ही नादान भक्तों ने पहुंचा दिया है। कोर्ट कभी-कभी उस मिथ्या दोषों का वास्तविक इतिहास मानकर पापपूर्ण निर्णय दे रहे हैं और भविष्य में क्या होगा कौन जाने ?

हे वैदिक धर्म के महान् प्रतिपालक भगवन् श्री राम ! कोर्ट व संसद के फैसलों से मेरे जैसा वेदानुरागी राष्ट्रभक्त एवं सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार समझने वाला बहुत आहत है। कल के फैसले से मेरा शरीर शिथिल हो रहा है, मस्तिष्क चकरा रहा है। मैं जिन कथित प्रबुद्धों को अपने वेदविज्ञान के द्वारा बौद्धिक दासता की बेड़ियों से मुक्त करना चाहता हूँ वे ही मेरे मूर्ख भाई आज कहाँ जा रहे हैं, उन्हें ये नये-नये कानून कुमार्ग पर ले जा रहे हैं। हे राम ! नये-नये कानून व न्यायालयों के निर्णय आपके आदर्शों की हत्याकर रहे हैं। देश के रखवाले मूकदर्शक हैं।

हे राम ! इस देश की संस्कृति परायी स्त्री को माता समझती थी, परन्तु आज यह क्या हो रहा है ? जिस पतिव्रत धर्म के कारण भगवती देवी सीता, सती सावित्री, सती अनुसुईया, देवी रुक्मिणी जैसी महान् नारियाँ विश्व पूज्य रहीं। जिसके लिए रानी पद्मिनी व रानी कर्मवती जैसी अनेकों क्षत्राणियों ने अपने को अग्नि में आहुत कर दिया, आज हमारे न्याय के मन्दिर उस पतिव्रत व पत्नीव्रत धर्म की चिता जला रहे हैं अर्थात् ये कानूनवेत्ता वा कानून के रखवाले इन देवियों की हत्या कर रहे हैं।

भगवान् मनु, महादेव शिव, भगवान् विष्णु, महर्षि ब्रह्मा, महर्षि भारद्वाज, महर्षि वसिष्ठ, महर्षि अत्रि, महर्षि अगस्त्य, महर्षि व्यास आदि हजारों के निर्मल चरित्र वाले वेदज्ञ, वैज्ञानिकों का भारत, इक्ष्वाकु, मान्धता, हरिश्चन्द्र, रघुराम, दुष्यन्त पुत्र भरत जैसे अनेक महान् धर्मात्मा राजपुरुषों का भारत, महर्षि परशुराम, महावीर, हनुमान, भीष्म पितामह, आद्य शंकराचार्य एवं महर्षि दयानन्द जैसे अखण्ड ब्रह्मचारियों का भारत, महात्मा बुद्ध व महावीर स्वाम जैसे वीतराग पुरुषों व अपाला, गार्गी, घोषा, लोपमुद्रा, मैत्रेयी जैसी विदुषियों का देश आज अपने ही काले अंग्रेज बने पुत्रों से पग-पग पर हार रहा है। वास्तविकता

तो यह है कि हमारा प्यारा भारत मर गया है और उसके शव पर खड़े होकर क्रूर, कामी, पापी इंडिया निर्लज्ज नग्न नृत्य कर रहा है।

हे भगवन् राम ! आज आपके कथित भक्त, हिन्दू-हिन्दू का जाप करने वाले संगठन, राजनैतिक दल सब मौन हैं। कोई कहीं आन्दोलन नहीं हो रहा है। इस फैसले को बदलने के लिए कोई सोच भी नहीं रहा है। बात-बात में आन्दोलन व अराजकता फैलाने वाले आज क्यों शान्तिपूर्वक आन्दोलन नहीं करते ? हाँ, अराजकता फैलाना तो राष्ट्र के प्रति द्रोह जैसा होता है। परन्तु शान्तिपूर्वक आन्दोलन करना देश के प्रत्येक जागरूक नागरिक का धर्म है। आज आवश्यकता इस बात की है कि स्वयं को भारतीय, आर्य वा हिन्दू कहने पर गर्व करने वाला (महिला व पुरुष) राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व सभी दलों के नेताओं को लगातार पत्र लिखकर दबाव बनाये, जिससे यह पिशाचों जैसा निर्णय वापिस लिया जा सके। कोर्ट से तो केवल पुनर्विचार की अपील ही की जा सकती है, जो सभी सक्षम नागरिकों को करनी ही चाहिए।

मैं तो आप सबको जगा ही सकता हूँ, मैं ऐसे कामी निर्णय करने वालों से कोई याचना नहीं कर सकता।

हे राम ! अब कोर्ट में आपके मंदिर बनने पर सुनवाई होनी है। इस देश की कथित रामभक्त जनता की आपके मंदिर बनाने की इच्छा है परन्तु आपके निर्मल चरित्र के विनाश पर उनके हृदय में कोई हलचल नहीं है। यह जनता चित्रों व मूर्तियों की पूजा को ही धर्म समझ रही है और ब्रह्मचर्य, सदाचार, प्रेम, करुणा जैसे वैदिक वा मानवीय मूल्यों से इनको कोई प्रेम नहीं रह गया है। आज कामुकता, हिंसा, वैर, दर्द, प्रतिशोध, अहंकार, द्वेष की अनिष्ट तरंगों से सम्पूर्ण आकाश व मनस्तत्त्व दूषित हो चुका है। इसी के कारण सम्पूर्ण विश्व में भयंकर चक्रवात, तूफान, भीषण गर्मी, दवानल, भूकम्प, सुनामी, बाढ़ व सूखा जैसी आपदाओं के साथ-साथ नाना प्रकार के अपराधों में सतत वृद्धि हो रही है और इन पापों के कारण अभी और अधिक त्रासदी आयेगी।

हे मेरे प्यारे देशवासियों ! यदि आपका हृदय पत्थर

का न हो और आपके अन्दर श्रीराम के प्रति कुछ भी भक्ति शेष बची हो, तो मेरे इस लेख पर कुछ तो विचार करो। कोर्ट के निर्णय पर कुछ तो आंसू बहाओ, अपनी कुम्भकर्णी नींद से कुछ तो जगो, अन्यथा ईश्वर आपको कभी क्षमा नहीं करेगा। हमारे महान् पूर्वजों की स्मृतियां आपके धिक्कारेगी। उठो! ऋषि-मुनियों के महान् वंशजो! अपने आत्म गौरव को जगाओ, माँ भारती व वेदमाता के दर्द को पहचानो, अपने धर्म व कर्त्तव्य को समझो। इसे यदि कोई प्रबुद्ध (वास्तव में बौद्धिक दास) धर्म, ईश्वर, वेद, ऋषियों व देवों का उपहास करने का दुस्साहस करे और आप उसका तर्कसंगत उत्तर न दे सकें, तो आप ऐसे अहंकारी कथित प्रबुद्ध (वास्तव में बौद्धिक दास) को मेरे पास लेकर आ सकते हैं और वह मेरे से ज्ञान युद्ध कर सकता है।

हे श्रीराम! आप तो इस समय मोक्षधाम में परमपिता परमात्मा की अमृतमयी गोद में विचरण कर रहे हैं, इधर आपके नादान भक्त आपको परमात्मा का अवतार मानकर यही सोचते हैं कि अधर्म बढ़ने पर आप अवतार लेंगे। भला, इससे अधिक और क्या अधर्म बढ़ेगा? ये महानुभाव अन्धश्रद्धा से अकर्मण्य होकर सैकड़ों वर्षों से हाथ पर हाथ बैठे सारे पापों को सह रहे हैं। हाँ, यदि कोई इस अन्धश्रद्धा से जगाता है, तो उसको ही अपना शत्रु समझ बैठते हैं। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वे इन कथित रामभक्तों में सच्ची ईश्वर पूजा का भाव जगाकर आप श्रीराम का सच्चा अनुयायी बनने के साथ-साथ देश के न्यायाधीशों, वकीलों तथा सभी प्रबुद्ध जनों को न्यायशील बनने की सद्बुद्धि व शक्ति प्रदान करें।

देव दयानन्द की महिमा

“संसार भर के महापुरुषों में महर्षि दयानन्द की शान निराली है। अन्य महापुरुषों में किसी में एक गुण है तो किसी में दूसरा। कोई प्रभुभक्त है तो विद्वान नहीं, कोई विद्वान है तो योगी नहीं, कोई योगी है तो सुधारक नहीं, कोई सुधारक है, तो दिलेर नहीं, कोई दिलेर है तो ब्रह्मचारी नहीं, कोई ब्रह्मचारी है तो वक्ता नहीं, कोई वक्ता है तो लेखक नहीं, कोई लेखक है तो सदाचारी नहीं, कोई सदाचारी है तो परोपकारी नहीं, कोई परोपकारी है तो कर्मठ नहीं, कोई कर्मठ है तो त्यागी नहीं, कोई त्यागी है तो देशभक्त नहीं, कोई देशभक्त है तो वेदभक्त नहीं, कोई वेदभक्त है तो उदार नहीं, कोई उदार है तो शुद्ध आहारी नहीं, कोई शुद्ध आहारी है तो योद्धा नहीं, कोई योद्धा है तो सरल नहीं, कोई सरल है तो सुन्दर नहीं, कोई सुन्दर है तो बलिष्ठ नहीं, कोई बलिष्ठ है तो दयालु नहीं, कोई दयालु है तो संयमी नहीं। परन्तु यदि आप ये सभी गुण एक ही स्थान पर देखना चाहें तो देव दयानन्द को देखो, निष्पक्ष होकर देखो”

सौजन्य: शिवालिक गुरुकुल, अलियासपुर, अम्बाला

आज की चिकित्सा प्रणाली में हाईजीन अर्थात् स्वस्थ व्रत कहते हैं। प्राचीन काल में अत्यन्त विकसित थी उस समय मनुष्य की दिन-चर्या जैसी थी। आज देखने को नहीं मिलती। जिसे हम आज विकास कह रहे हैं वस्तुतः वह शारीरिक, आत्मिक व सामाजिकता में हवस है।

जब विवाहों में डिस्पोजल प्लास्टिक आदि के बर्तन प्रयोग करते हैं। एक बार ही प्रयोग कर कूड़ेदान में डाल दिया जाता है। पहले पत्तल दोना प्रयोग में आती थी, जिन्हें पेड़ पौधे आदि से प्राप्त किया जाता था। दूध व जल के लिए कसौरे जो मिट्टी के बर्तन थे। कुम्हार बनाते थे यह भी शुद्ध व पवित्र प्राकृतिक व्यवस्था थी और आज की भांति भोजन ग्रहण करने का तरीका नहीं था। आज तो जिसे डोंगा सिस्टम कहते हैं एकदम निकृष्ट है, पाशविक है यह उससे भी बुरा है। जैसा कि ग्रामों में होता है। घर में जहां पशुओं के रहने का स्थान होता है वहां पशुओं का चारा खोड़ा या नाद में लगा दिया जाता है, जंगल से जब पशु आते हैं तो वह टूट कर पड़ते हैं। आधा खाते आधा फैलाते व बछड़ी, बछड़े गाय भैंस एक दूसरे को धकेलते सींग मारते जाते खाते जाते हैं। ठीक वह पशुओं वाला सिस्टम आज पार्टी शादी बारातों आदि में होता है।

भारतीय संस्कृति में भोजन बैठकर करने का विधान है। वह भी पंक्ति में भोजन उतना ही लिया जाता है जितनी आवश्यकता हो। भोजन से पूर्व मन्त्र बोलने का विधान है। खड़े होकर जल ग्रहण करना व भोजन करना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। भोजन बैठकर ही सुगमता से होता है शास्त्रोक्त है।

रसोई जिसे चौका भी कहा जाता है पहले तो घर के अन्दर भी जूते चप्पल पहन कर अन्दर प्रवेश नहीं करते थे, परन्तु आज तो घर तो क्या गृहणी जूते चप्पल पहन कर ही भोजन बनाती है। पहले बिना स्नान ध्यान किये रसोई में नहीं घुस सकते थे, क्योंकि घर व रसोई में पवित्रता बनी रहे, स्वच्छता बनी रहे और तो और मिट्टी के बर्तन उपयोग में

आते थे, जो स्वास्थ्य के लिए हित कर भी है। राजीव दीक्षित जी ने मिट्टी के बर्तनों का दैनिक जीवन में उपयोग को अत्यन्त बढ़िया बताया है और फिर परतल मिट्टी के बर्तनों से नाले नालियां बन्द नहीं होता। प्रदूषण नहीं होता शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। खाद बना कर उपयोग में ले लिया जाता है। जैसा कि पोलीथीन व रासायनिक पदार्थों से बने डिस्पोजल, गली मोहल्लों में हवा के साथ उड़ कर प्रदूषण करते हैं।

आज सभी कमी सुनाई देता है कि फलां शहर में पुल था फ्लैट गिर गया इमारत भड़भड़ा कर गिर गई होता है जान माल की क्षति भी होती है। कहते हैं टेक्नोलॉजी बढ़ी है सहस्रो वर्ष पुराने किले इमारतें आज भी खड़े हैं। राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि में हवेलियां महल आज भी हैं। पाण्डवों का किला पांच हजार वर्ष पुराना है। हस्तिनापुर में खण्डहर आज भी है। विदेशियों ने आक्रमणों में तोड़ दिये। तक्षशिला व मालन्दा विश्वविद्यालय अन्य जगह सभी जानते हैं। श्रीरामचन्द्र जी द्वारा बनाया गया सेतु सोच सकते हैं कितना उच्च कोटि का विज्ञान था उस समय का।

सिन्धु, हड़प्पा की खुदाई वहां नगर की व्यवस्था पानी के निकास की विधि कितनी व्यवस्थित थी। मेरे ताऊ जी खेत पर खाना खाने के बाद रहट का बहता पानी पीने हेतु प्रयोग कर लेते थे। वह शीतल मधुर बहता जल हमें अच्छा लगता था। सरितावादी का जल झरनों का जल, हृदय को शान्ति देता था। पवित्र व शुद्ध होता था, ग्रामीण लोग नदी झरने कुओं का जल घरों में प्रयोग करते थे। राजस्थान में बावड़ी से जल लाते थे और सब स्वस्थ रहते थे। उस समय जल, थल, वायु, प्रदूषण रहित होते थे शुद्ध पवित्र होते थे।

खेत या कृषि में रासायनिक खाद का, कीटनाशकों का आज पूरी तरह से प्रयोग होता है। गेमेक्सीन फोरेट

फ्यूराडोन आदि ऐसे रसायन हैं जिनसे कीट पतंगे तो क्या वहां जंगली वन्य जीव भी मर जाते हैं। जब इन शाक सब्जियों व अनाज को मनुष्य खाते हैं तो उनका स्वास्थ्य कैसे ठीक रह सकेगा? उनको हृदय, चर्म, श्वास, गुर्दे, आमाशय आदि के रोग होंगे ही वही आज हो रहा है। दूध, फल अनाज मसाले आदि भोज्य पदार्थ रासायन से प्रदूषित तो हैं ही ऊपर से व्यवसायी उनमें मिलावट कर और हानिकारक बना रहे हैं। बड़े बड़े अधिकारियों को शुद्ध पनीर दूध घी पहुंचा दिया जाता है। जनता को दूध के स्थान पर जहर पिलाया जाता है। पहले गोधन की ओर अधिक ध्यान दिया जाता था। घर घर गाय थी, गौशालायें थीं, श्रीकृष्ण के यहां ही सवा लाख गायें बतायी जाती है। दूध प्रचुर मात्रा में होता था। दूध, घी की कमी न थी। आज आजादी केबाद भी सरकारों ने गायों की संख्या की ओर ध्यान ही नहीं दिया, उल्टे गोहत्या हो, मांस विदेशों में चोरी छिपे द्वारा भेजा जा रहा है। दक्षिण पंथी तो गाय का मांस खाते हैं, राजनीति भी जिससे प्रेरित हो गयी थी।

भारत में पहले गाय व दूध बेचा नहीं जाता था, क्योंकि दूध की कमी न थी। भारत कृषि प्रधान देश था, आज भारत उद्योग प्रधान होता जा रहा है। उद्योग लगाना

ठीक है, परन्तु जितना प्रदूषण उद्योगों से होता है, अन्य से नहीं कारखानों में ऊंची ऊंची चिमनियों से जहरीली हानिकारक गैसों निकलती रहती है। वातावरण में चारों ओर जहर घुल कर मानव को ही नहीं जीवों को भी नष्ट कर रहा है। अकेले जीव तो नष्ट प्रायः हो गये हैं। आज गौरैया भी आंगन में नहीं चहचहा रही है।

प्राचीन काल में कारखाने तो न था हस्तशिल्प विशेष थी, घर, भवन बनाने की कला श्रेष्ठ थी। वैदिक ज्योतिष थी दिन-चर्या श्रेष्ठ थी, चारों ओर जहां मंदिर है, जिनका ऊपरी भाग ऊंचा होता है। यज्ञशालाएँ थीं, यज्ञ होते थे, जिनसे वातावरण सुगंधित मनमोहक शुद्ध व पवित्र रहता था। जैन व बौद्ध मत में उनको मूर्ति स्थापना हुई। आज यज्ञशालाएँ तो समाप्त हो गयी, उद्योगशालाएँ वातावरण में यज्ञ धूम्र के स्थान पर विषाक्त गैस छोड़ मानव का जीवन बर्बाद कर रही है। पहले लोगों के स्वास्थ्य अच्छे थे। शुद्ध पवित्र भोजन था। शाकाहारी लोग थे, ब्रह्मचर्य था, अग्निहोत्र करते थे। सुखी रहते थे। आज भाग दौड़ के जीवन में न वह अपने अतीत से उन श्रोताओं को ग्रहण करना चाहिए जिससे हमारा जीवन सुखी बन सके।

पता : खुर्जा, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

न बन्धुमध्ये धनहीन जीवनम्

वरं वनं व्याघ्रगजेन्द्रसेवितं, दुमालये पन्नफलाम्बुभोजनम् ।

तृणानि शय्या वसनं च वल्कलं, न बन्धुमध्ये धनहीनजीवनम्॥

भावार्थ : कहावत है कि - बुरे दिनों में कोई किसी का नहीं होता सच ही है सिंह, हाथी आदि से घिरे हुए वन में चले जाना श्रेयस्कर है, वृक्ष के नीचे घर बनाकर पत्तों फलों और जल को खा पीकर भोजन से निर्वाह कर लेना ठीक है, घांस की शय्या और वल्कल (वृक्षाजिन) का वस्त्र बनाकर दिन गुजारना भी अच्छा है परन्तु गरीब होकर अपने कुटुम्बीजनों के मध्य रहना उचित नहीं है। निर्धनावस्था में सभी लोग हँसी उड़ाते हैं कुटुम्बीजन तो विशेषतया उपेक्षा करते हैं।

- सुभाषित सौरभ

‘महर्षि दयानन्द सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के आदर्श उदाहरण’



वैचारिक

- मनमोहन कुमार आर्य



महर्षि दयानन्द ने अपनी शिक्षा व विद्या पूरी होने पर वेद व सत्य मान्यताओं व परम्पराओं का प्रचार किया और इसके लिए अन्धविश्वासों, पाखण्ड, फलित

ज्योतिष सहित सभी प्रकार की अविद्या व मिथ्या मान्यताओं का खण्डन किया। इसकी प्रेरणा उन्हें अपने विद्या गुरु प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती मथुरा से मिली थी। महर्षि दयानन्द देश भर में घूम कर अविद्या का नाश करने और विद्या की उन्नति करने हेतु वेदों का प्रचार करते थे। वह बंगाल पहुंचते चो वहां उन्हें ब्रह्म समाज के नेता श्री केशवचन्द्र सेन ने अपने उपदेशों और व्याख्यानों में संस्कृत के स्थान पर आर्य भाषा हिन्दी को अपनाने की प्रेरणा की। महर्षि दयानन्द इन दिनों वस्त्र धारण न कर कौपीन मात्र धारण करते थे। श्री केशव चन्द्र सेन ने स्वामी जी को वस्त्र धारण करने का सुझाव दिया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। यद्यपि उन्हें वस्त्र धारण करने की इच्छा व आवश्यकतानुसार नहीं थी, परन्तु उन्हें भ्रमण करते हुए स्त्री-पुरुषों से युक्त मनुष्य समुदाय के सम्पर्क में आना पड़ता था। सम्भव था कि यदा-कदा वा अनजाने में कोई महिला भी उनसे वार्तालाप, अध्ययन व व्याख्यान में आ सकती थीं। अतः मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए उन्होंने ब्रह्म नेता सेन महाशय का यह सुझाव भी तत्काल स्वीकार कर लिया।

समय व्यतीत होता रहा और महर्षि दयानन्द काशी में प्रचार कर रहे थे। वहां डिपुटी कलेक्टर राजा जयकृष्ण

दास आपके भक्त, अनुयायी व सहयोगी बन गये। आपने स्वामी जी को सुझाव दिया कि आपके श्रीमुख से उत्तम प्रवचन व व्याख्यान प्रस्तुत किये जाते हैं। आपके विचारों वा प्रवचनों से वही लोग लाभान्वित होते व हो सकते हैं जो कि उसमें उपस्थित होते हैं। जो लोग लाभान्वित होना चाहें, परन्तु किन्हीं कारणों से वहां न आ सकें, उन्हें आपके विचारों को जानने का लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। कालान्तर में जब आप नहीं रहेंगे तब भी आपके विचार, मान्यताओं व वैदिक सिद्धान्तों से समकालिक व आने वाली सन्ततियां वैदिक ज्ञान से वंचित रहेंगी। यदि आप अपने विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों का एक विस्तृत ग्रन्थ लिख दें तो इन सभी समस्याओं का निदान हो जायेगा। महर्षि दयानन्द इस उत्तम प्रस्ताव को सुनकर प्रसन्न हुए और उसे उन्होंने तत्काल स्वीकार कर लिया। अनुमान है कि उसके तीन माह के अन्दर ही सन् १८७४ में आदिम सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ तैयार कर दिया। यह सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण था। आपने कुछ समय पहले ही आर्यभाषा हिन्दी सीखना आरम्भ किया था। अतः भाषा के परिमार्जन की आवश्यकता थी। स्वामी जी ने जिन लेखकों को बोलकर यह ग्रन्थ लिखाया था, वह पौराणिक विचारों के थे। अतः पौराणिक मनोवृत्ति के कारण उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में आपके आशय के विपरीत कुछ वचन डाल दिये थे, जिनका सुधार व परिमार्जन अपेक्षित था। अतः ऋषि दयानन्द ने मृत्यु से पूर्व सन् १८८३ में सत्यार्थ प्रकाश का संशोधित संस्करण तैयार कर दिया जो उनकी मृत्यु के समय मुद्रणाधीन था। ३० अक्टूबर १८८३ को स्वामी की मृत्यु हो जाने पर यह ग्रन्थरत्न सन् १८८४ में प्रकाशित हुआ। अतः सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रन्थ के लेखन की प्रेरणा भी उन्हें

अपने भक्त व प्रशंसक राजा जयकृष्ण दास मुरादाबाद से वाराणसी में मिली थी, जिसे उन्होंने सहर्ष व सधन्यवाद स्वीकार किया था।

आर्यसमाज की स्थापना की प्रेरणा व प्रस्ताव महर्षि दयानन्द जी को मुम्बई में उनके अनेक भक्तों से मिला था। महर्षि दयानन्द को यह प्रस्ताव पसन्द आया था, परन्तु उन्होंने वहां के लोगों को सावधान कर दिया था कि यदि आप आर्यसमाज के संचालन में सतर्क व सावधान नहीं रहे तो आगे चलकर गड़बड़ घोटाला हो सकता है। महर्षि दयानन्द ने मुम्बई में १० अप्रैल १८७५ को आर्यसमाज की स्थापना तो कर दी और उसके बाद आर्यसमाज ने अनेक अभूतपूर्व कार्य भी किये। उनके आरम्भ में किये गये कार्य आज भी जारी है, परन्तु आर्यसमाज का जो स्वरूप होना था वह आज देखने को नहीं मिल रहा है। आज आर्यसमाजों में वह व्यवस्थायें देखने को नहीं मिलती जिन्हें हम आदर्श व्यवस्थायें कहते हैं जबकि अन्य अनेक संस्थायें हमसे कहीं आगे चल रही हैं। ऐसी स्थिति में अन्य क्या सोचते हैं, यह जानना तो कठिन है, परन्तु आर्यसमाज के सदस्य व ऋषि भक्त भी आर्यसमाज व इसकी आंतरिक सभाओं के क्रियाकलापों से पूर्णतया तन्तुष्ट नहीं अपितु दुःखी अवश्य हैं। लोकैवणा, स्वार्थ और पदलोभता के आन्तरिक शत्रुओं ने आर्यसमाज को भारी हानि पहुंचाई है और स्थिति वर्तमान में भी दुर्भागपूर्ण है। इससे लगते हैं कि ऋषि की आर्यसमाज की स्थापना के अवसर पर दी गई चेतावनी सत्य सिद्ध हो रही है। यहां हमारा उद्देश्य यह बताना था कि आर्यसमाज की स्थापना भी ऋषि ने अपने सच्चे भक्तों के आग्रह पर उनके सहयोग से की थी।

सत्यार्थ प्रकाश की रचना के बाद महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित यजुर्वेद एवं ऋग्वेदभाष्य (सातवें मण्डल के अनेक सूक्तों तक), संस्कार विधि, आर्याभिविनय न अनेक लघु ग्रन्थों की रचनायें की। यह लेखन कार्य इनके महत्व व आवश्यकता को देखकर कुछ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्व-विवेक से सम्पन्न किये गये। इसके लिए महर्षि स्वयं सावधान थे, अतः इसके लिए उन्हें

किसी व्यक्ति विशेष का कोई ऐसा प्रस्ताव नहीं मिला जैसा कि सत्यार्थप्रकाश के लेखन के लिए मिला था।

महर्षि दयानन्द जी का एक मुख्य कार्य अपने वर्चस्व की उत्तराधिकारिणी सभा, परोपकारिणी सभा की स्थापना का था। इसे महर्षि दयानन्द ने अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व उदयपुर में सम्पन्न किया था। यह उनकी अपनी मृत्यु विषयक निजी अनुभूतियों का परिणाम था। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें यह आभास हो गया था कि वह जो वेद प्रचार और अन्य मतों की मिथ्या मान्यताओं व अन्धविश्वासों की समीक्षा एवं खण्डन-मण्डन करते हैं, उसका अपने जीवन के प्रति घातक परिणाम हो सकता है। ऐसी स्थिति में किसी प्रकार का कोई विवाद न हो, और उनके बाद भी उनके द्वारा स्थापित वा आरम्भ वेद प्रचार का कार्य सुचारु रूप से चलता रहे, इस पर विचार कर रही उन्होंने परोपकारिणी सभा की स्थापना की थी। महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु वा महाप्रस्थान अजमेर में होने के कारण इस सभा का मुख्यालय वहीं बनाया गया जो आज भी सक्रिय रहकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति में लगा हुआ है। यह कार्य भी उन्होंने स्वविवेक से किया जिससे आर्यसमाज को बहुत लाभ हुआ। यदि परोपकारिणी सभा की स्थापना न हुई होती तो आर्यसमाज के सामने कठिनाईयां आ सकती थीं।

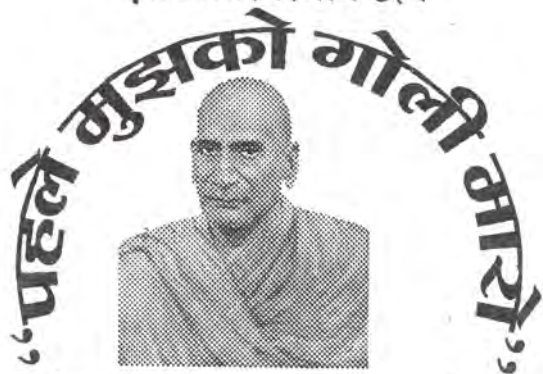
महर्षि दयानन्द जी अपने वैदिक सिद्धान्तों व विचारों के पक्के थे। यदि उनका कोई भक्त व अनुयायी उनके हित का कोई प्रस्ताव करता था जिससे उनके जीवन को हानि की आशंका होती थी, तो वह अपने अनुयायियों द्वारा किसी स्थान विशेष की यात्रा न करने का सुझाव को स्वीकार नहीं करते थे। ऐसा ही जोधपुर में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए जाते समय हुआ था। उनके भक्त शाहपुरा रियासत के आर्य नरेश नाहरसिंह जी व अन्य कुछ भक्तों को स्वामी जी के जोधपुर जाने पर उनके जीवन को हानि होने की आशंका थी। उन्होंने स्वामी जी को यात्रा न करने वा वहां के लोगों से सावधान रहने व प्रचार में संयम बरतने का सुझाव दिया था। स्वामी जी ने यात्रा न करने का सुझाव स्वीकार नहीं किया और अपने अनुयायियों को कहा कि

यदि लोग उनकी उंगिलियों को बत्तियों की तरह जला भी दे तो भी वह सत्य को प्रकट करने से न चूकेंगे। जोधपुर प्रवास में जिस बात की आशंका थी वही हुई। जोधपुर में उन्हें विष दिया गया जिसके परिणामस्वरूप वह रुग्ण हो गये। उनके उपचार में भी अनियमिततायें हुईं। एक ऐसे चिकित्सक अलीमर्दन ने उनका उपचार किया जो अनुमानतः उनके प्रति द्वेष रखता था। स्वामी जी को विष दिये जाने के पीछे किसी बड़े राजनीतिक षड्यन्त्र होने की सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता। इसका कारण था कि वह देश की आजादी के समर्थक थे। उन्होंने अपने सत्यार्थप्रकाश व आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों में विदेशी सरकार के विरोध में विचार प्रकट किये थे। वह जोधपुर महाराजा की वैश्यावृत्ति आदि अन्य मिथ्याचार के भी घोर आलोचक थे और उसका कठोर शब्दों में खण्डन करते थे। अतः उनके जीवन को नष्ट करने के किसी बड़े षड्यन्त्र की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता। जो भी हो, जोधपुर में उन्हें विष दिया गया, उपचार में गड़बड़ी हुई जिसके कारण ३० अक्टूबर सन् १८८३ को अजमेर में दीपावली के दिन उन्होंने अपनी इच्छा से ईश्वरोपासना करते हुए प्राणायामपूर्वक श्वास छोड़ दिया और ब्रह्मलोक वा मोक्ष को प्राप्त हो गये।

स्वामी दयानन्द जी उच्च कोटि के योगी और महाभारत के बाद वेदों के असाधारण व अपूर्व विद्वान् थे। उनका जीवन सत्य के ग्रहण करने का सर्वोत्तम उदाहरण है। उन्होंने उन्हें दिये जाने वाली किसी अच्छे प्रस्ताव की उपेक्षा नहीं की, अपितु उन्हें स्वीकार कर सत्य के ग्रहण का प्रेरणापद उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका स्थापित किया आर्यसमाज अपनी आरम्भिक व उसके कुछ वर्ष के बाद के यश व कीर्ति को अक्षुण्ण नहीं रख पा रहा है। ईश्वर कृपा करे कि महर्षि दयानन्द का स्थापित किया आर्यसमाज देश व संसार की आदर्श संस्था बन सके और उनके स्वप्न साकार हो। इसके लिए ऋषि के जीवन से प्रेरणा लेकर निजी लोकैषणा व स्वार्थों का त्याग करना होगा जो असम्भव तो नहीं परन्तु कठिन अवश्य है।

पता : १९६, चुकखूवाला-२, देहरादून-२४८००१

एक अविस्मरणीय दृश्य



ब्रिटिश तंत्र की तानाशाही के विरुद्ध आन्दोलन।
का विशाल जन जुलूस निकाला स्वयं किया संचालन॥
अहा ! चांदनी चौक दृश्य वह नयनों में छा जाता।
जुलूस रोकता सैनिक दल, संगीनों को चमकाता॥
और सिंह गर्जना वह, कानों में है गहराती।
पहले मुझको गोली मारो, खोल खड़ा था छाती॥
वह निर्भीक, सुदृढ़ जननेता श्रद्धानन्द हमारा।
त्याग, समर्पण, जनसेवा हित जिसने तन था धारा॥
ओजपूर्ण मुखमण्डल, गर्जन का प्रभाव गहराया।
जनता के तन, मन में अद्भुत अमित जोश भर आया॥
संन्यासी का प्रखर तेज, तप देख झुकी संगीने।
रायफलों की नलियों में मुख जमीं ओर कर दी ने॥
रुद्ध मार्ग खुल गया, जुलूस ने आगे कदम बढ़ाया।
वृहद भीड़ ने आर्य तुम्हारे जय जयकार लगाये॥
धन्य धन्य संकल्प, सुदृढ़ साहस नेतृत्व तुम्हारा।
मन श्रद्धानन्दी चरणों में करता नमन हमारा॥
अहा ! दृश्य वह जब भी मेरे नयनों में घिर जाता।
मन मेरा श्रद्धा से श्रद्धानन्द के प्रति भर जाता॥

- दयाशंकर गोयल,

१५५४-डी, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

अनन्त कोटि सृष्टि का प्रलय एक साथ होता है या अलग-अलग

(एक वैज्ञानिक संगोष्ठी के तथ्यात्मक विचार)

- ओमप्रकाश आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के अष्टमसमुल्लास में सृष्टि उत्पत्ति स्थिति और प्रलय विषय पर व्याख्या करते हुए लिखते हैं - “यह सब जगत् सृष्टि से पहले अन्धकार से आवृत्त, रात्रिरूप में जानने के अयोग्य, आकाशरूप सब जगत् तथा तुच्छ अर्थात् अनन्त परमेश्वर के सम्मुख एकदेशी आच्छादित था।” वे सत्यार्थ प्रकाश के नवमसमुल्लास में लिखते हैं - “वह मुक्त जीव अनन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द घूमता, शुद्ध ज्ञान से सब सृष्टि को देखता, अन्य मुक्तों के साथ मिलता, सृष्टि विद्या को क्रम से देखता हुआ सब लोक-लोकान्तरो में अर्थात् जितने ये लोक दिखते हैं और नहीं दीखते उन सब में घूमता है। वह सब पदार्थों को जो कि उसके ज्ञान के आगे हैं सबको देखता है। जितना ज्ञान अधिक होता है उसको उतना ही आनन्द अधिक होता है।”

स्वामी जी के कथनानुसार - “यह सब जगत् सृष्टि से पहले अन्धकार से आवृत्त था।” जरा विचार करें यह सब जगत् अर्थात् हम जिस सृष्टि में रह रहे हैं उसी का बात है। सृष्टि का कहीं आदि अन्त है या नहीं। यह आज तक किसी वैज्ञानिक ने घोषणा नहीं की, अपितु इतना जरूर कहते हैं कि आकाशगंगा और नीहारिका का निरन्तर विस्तार हो रहा है। वे यह भी मानते हैं कि बहुत से ऐसे तारे हैं जिनका प्रकाश अभी तक करोड़ों वर्षों में पृथ्वी तक पहुंचा ही नहीं है। इस आधार पर सृष्टि का विस्तार अनन्त है। इसे परमात्मा ही जाने, यह मनुष्य की कल्पनाशक्ति से परे है।

हमारी पृथ्वी, हमारा सौरमण्डल, हमारी आकाशगंगा, असंख्य आकाशगंगाओं से बनी नीहारिकाएँ, नीहारिकाओं से परे भी कुछ होगा। इस आधार पर अनन्त कोटि सृष्टि है। महर्षि दयानन्द को शब्दों पर ध्यान दें -

“अनन्त परमेश्वर के सम्मुख एकदेशी आच्छादित था। यह एकदेशी शब्द ध्यातव्य है।” एकदेशी का विलोम सर्वदेशी होता है। प्रलय में सृष्टि एकदेशी अन्धकार से आवृत्त थी सर्वदेशी नहीं। परमात्मा सर्वदेशी है। प्रलय एकदेशी है। चिन्तन करें - सब कुछ एक साथ बनता नहीं तो सब कुछ एक साथ बिगड़ेगा कैसे? अगर हम अनन्त कोटि सृष्टि का प्रलय एक साथ मान लेंगे तो हमारा वैदिक सिद्धान्त असत्य हो जायेगा। अब महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों पर विचार करें - “वह मुक्त जीव सब सृष्टि को देखता है, उन सब में घूमता है।” जब हम यह मान लेंगे कि सृष्टि का प्रलय एक साथ होता है और वह प्रलय चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष तक रहता है तो क्या इतने काल तक मुक्त जीव कुछ देखेगा नहीं, कहीं घूमेगा नहीं? फिर तो उसकी स्थिति बद्ध जीवों जैसी हो जाएगी। सृष्टि का प्रलय एक साथ न मानने पर मुक्त जीवों के लिए कोई फर्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि जहाँ प्रलय नहीं होगा, मुक्त आत्माएँ वहाँ चली जाएंगी। ऐसा मानने पर हमारे वैदिक सिद्धान्त पर कोई आँच नहीं आती।

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के नवमसमुल्लास में लिखते हैं - “मोक्ष में जीवात्मा जब सुनना चाहता है तब श्रोत्र, स्पर्श करना चाहता है तब त्वचा देखने के संकल्प से चक्षु मुक्ति में हो जाता है। यह उसका स्वाभाविक शुद्ध गुण है। यदि हम सृष्टि का प्रलय एक साथ मान लेंगे तो क्या चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष तक मुक्त जीवात्मा कुछ देखना नहीं चाहेगा। इतने समय तक अन्धकार में निश्चेष्ट बना रहेगा क्या? फिर उसकी मुक्ति क्या हुई? एकदेशी प्रलय मानने पर उसके लिए कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में वह भ्रमण करेगा। महर्षि एकदेशी शब्द ही यह सिद्ध कर रहा है कि सम्पूर्ण सृष्टि का प्रलय एक साथ नहीं होगा।

भाई परमानन्द



जिस समय अत्याचारी मुगल बादशाह औरंगजेब ने सिखों के नये गुरु तेग बहादुर को निर्ममतापूर्वक दिल्ली में कत्ल करवाया था, उस समय उनके साथ पंजाब के एक ब्राह्मण मतिदास का शरीर आरे से चिरवाकर उसे भी गुरु महाराज के साथ धर्म की वेदी पर बलिदान कर दिया था। जब दशम गुरु गोविन्दसिंह को इन बलिदानों के समाचार मिले तब उन्होंने मतिदास के वंशजों को भाई कहकर पुकारा क्योंकि गुरु तेगबहादुर के साथ एक सहोदर भाई की तरह मतिदास ने भी अपने प्राण न्यौछावर किये थे। तब से उस ब्राह्मण मतिदास के वंशज भाई सम्बोधन से ही पुकारे जाने लगे। मुहियाल ब्राह्मणों के इसी पवित्र वंश में भाई परमानन्द का जन्म १८७६ में हुआ। उनके पिता भाई ताराचंद जेहलम जिले के कटियाला ग्राम के निवासी थे।

भाई की प्रारंभिक शिक्षा अपने ग्राम से ही हुई। उसके बाद वे चक्रवाल के मिडिल स्कूल में भर्ती हुए। उनकी उच्च शिक्षा लाहौर में हुई। डी.ए.वी. कालेज लाहौर से उन्होंने बी.ए. किया और कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कालेज से इतिहास में एम.ए. किया।

डी.ए.वी. कालेज लाहौर



ऋषियों, महात्माओं तथा महापुरुषों की पवित्र जीवनियों का अवलोकन करने से भली भांति विदित होता है कि उनका जीवन सफल था। सफल जीवन के लिए जिन उत्तम साधनों की परमावश्यकता प्रतीत होती है यह सब पूर्ण रूपेण उनके जीवन में सम्यक्तया उपलब्ध होते हैं।

महापुरुषों के जीवन परिचय ग्रहण करने दिव्य गुणों को जानने का अवसर प्राप्त होता है। उनका पुरुषार्थ पूर्ण साधनामय उदार जीवन हमें प्रेरणा प्रदान करता है और उससे प्रेरित होकर हम अपने कर्तव्य का पालन कर सकते हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आर्यसमाज से महापुरुषों के प्रेरक जीवन चरित्रों को हम यहां पर प्रकाशित कर रहे हैं।

सम्पादक

की आजीवन सेवा करने वाले समर्पित व्यक्तियों को मात्र ७५ रुपये मासिक जीविका निर्वाह हेतु मिलते थे। भाई परमानन्द जी कालेज में इतिहास पढ़ाते थे, तथा धर्म प्रचारार्थ पंजाब के नगरों का भ्रमण भी करते थे।

भाई जी के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब उसे पूर्वी अफ्रीका में आर्य धर्म के प्रचारार्थ भेजे जाने का प्रस्ताव आया। सम्भवतः ये आर्यसमाज के प्रथम प्रचारक थे, जो अफ्रीका महाद्वीप में उसे प्रवासी भारतीयों के अनुरोध पर वहां गए। १९०६ में उनका यह प्रथम विदेश प्रवास हुआ। मोम्बासा, नैरोबी, जोहान्सबर्ग, नेटाल आदि स्थानों में धर्म प्रचार करने के उपरान्त ये डर्बन पहुंचे। उन दिनों महात्मा गांधी बैरिस्टर के रूप में, अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों का हितचिन्तन करते हुए। उनके नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे थे। भाई जी ने महात्माजी से भेंट की। उनके सेवा भाव तथा समर्पणशील व्यक्तित्व से वे अत्यन्त प्रभावित हुए। गांधी जी से उनका मैत्री भाव जीवन पर्यन्त रहा। अफ्रीका में पर्याप्त समय व्यतीत कर भाई परमानन्द इंग्लैण्ड चले गए। यहां निवास करने वाले महान क्रांतिकारी देशभक्त पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा से भेंट की। लंदन में श्यामजी ने इंडिया हाऊस की स्थापना कर, उसे देशभक्त भारतीय

युवकों तथा विद्यार्थियों के मिलने का एक केन्द्र स्थल बना दिया था। भाईजी की यहां लाला हरदयाल तथा विनायक दामोदर सावरकर आदि युवकों से भेंट हुई जो भारत की स्वतंत्रता की तड़प लेकर इस विदेशी धरती में स्वाधीनता की ज्योति जलाए बैठे थे। भाई परमानन्द ने अपने इंग्लैण्ड निवास के दौरान, ब्रिटिश म्यूजियम में संगृहीत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री को देखा। उसके आधार पर उन्होंने भारत के इतिहास को सही सही ढंग से लिखने का मन बनाया। इसी दुर्लभ सामग्री के आधार पर भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उद्भव शीर्षक से एक शोध प्रबंध भी उन्होंने लिखा। लंदन विश्वविद्यालय की एम.ए. की उपाधि के लिए उसे प्रस्तुत किया। किन्तु भारतीय राष्ट्रवाद के सही दृष्टिकोण से लिखे गए इस ग्रन्थ को साम्राज्यवादी प्राध्यापक भला क्यों स्वीकृति देते।

१९०८ में भाई परमानन्द स्वदेश लौट आए। पहले की भांति वे डी.ए.वी. कालेज तथा आर्यसमाज के कार्यों में लग गए। १९०८ में वे दक्षिण भारत में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ निकले। विभिन्न स्थानों पर जाकर सामाजिक जागृति का शंखनाद किया।

१९०७ का वर्ष पंजाब में राजनैतिक उथल-पुथल का था। लाला लाजपत राय तथा सरदार अजीत सिंह को देश निकाला दिया गया और आर्यसमाज पर भी अंग्रेज सरकार की एक वक्र दृष्टि पड़ी। सरकार ने भाई जी के विचारों और कार्यकलापों को भी संदेह की दृष्टि से देखा। डी.ए.वी. कालेज के संचालकों ने उनकी सेवाएं समाप्त कर दी। विदेशी सरकार ने उन्हें राजद्रोह के षडयंत्र में भाग लेने का आरोप लगाकर गिरफ्तार कर लिया। किन्तु उन पर अभियोग चलाकर दण्डित करने में सरकार को सफलता नहीं मिली।

अब भाई परमानन्द ने पुनः विदेश यात्रा पर जाने का निश्चय किया। फ्रांस होते हुए वे न्यूयार्क जा पहुंचे। यहां से उन्होंने ब्रिटिश गुयाना के लिये प्रस्थान किया। इस यात्रा में उनकी लाला हरदयाल से पुनः भेंट हुई। दोनों देशभक्तों ने खुलकर विचारों का आदान-प्रदान किया। गुयाना से वे पुनः अमेरिका आए। वहां औषध निर्माण का

काम सीखते रहे। १९१४ में वे स्वदेश लौटे। उन्होंने औषध निर्माण करके जीविका चलाने का निश्चय किया। उन्होंने लंदन में एकत्रित सामग्री से भारत का इतिहास नामक खोजपूर्ण ग्रन्थ लिखा, किन्तु सरकार ने उसे जब्त कर लिया। यह पुस्तक पाठकों तक नहीं पहुंच पाई।

२२ फरवरी १९२५ को भाईजी को लाहौर षडयंत्र अभियोग में बंदी बना लिया गया। अभियोग का निर्णय करने के लिए एक विशेष न्यायिक ट्रिब्यूनल का गठन किया गया, जिसके दो अंग्रेज तथा एक भारतीय सदस्य थे। अनुमान तो यह था कि भाईजी को फांसी का दण्ड दिया जाएगा, किन्तु ट्रिब्यूनल के भारतीय सदस्य के आग्रह पर उन्हें आजन्म कारावास की सजा हुई। वे कालापानी भेज दिये गए। इस भीषण दण्ड को भोगते हुए उन्हें कैसी कैसी अमानुषिक यातनाएँ झेलनी पड़ी। इसका रोमांचक वर्णन स्वयं भाईजी ने अपनी आत्मकथा में किया है। महात्मा गांधी और भारत भक्त एण्ड्रूज के प्रयत्नों से १९२० में उन्हें कालापानी से रिहा कर दिया गया। वर्षों बाद वे स्वदेश लौटे। उस समय देश में महात्मा गांधी द्वारा चलाए जाने वाले असहयोग आन्दोलन का जोर था। सरकारी स्कूलों और कालेजों का बहिष्कार किया जा रहा था। स्वदेशी भावना को प्रोत्साहन देने के लिए स्थान-स्थान पर राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित किये जा रहे थे।

लाहौर में जब महात्मा गांधी की प्रेरणा से नेशनल कालेज खोला गया तो भाईजी को इसका प्रिंसिपल पद दिया गया। अमर शहीद भगतसिंह ने भी इसी कालेज में भाईजी से देशभक्ति का पाठ पढ़ा था। असहयोग के साथ-साथ महात्मा गांधी ने खिलाफत की तहरीक का समर्थन कर मुसलमानों का राष्ट्रीय आन्दोलन में सहयोग लाने का प्रयास किया, किन्तु जब टर्की में कमाल पाशा ने सत्ता संभाली और खिलाफत का सामना चूर-चूर हो गया तो देश में साम्प्रदायिक दंगों की आग भड़क उठी। उस समय मुस्लिम साम्प्रदायिकता के तूफान का मुकाबला करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि तथा हिन्दू संगठन पर बल दिया। लाला लाजपत राय तथा मदनमोहन मालवीय जैसे हिन्दू निष्ठावाले नेताओं ने हिन्दू महासभा को शक्तिशाली

बनाने पर जोर दिया। भाई परमानन्द ने देश की राजनैतिक स्थिति तथा कांग्रेस की अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की नीति का भली भांति विश्लेषण किया। वे इस नतीजे पर पहुंचे कि यदि भारत में हिन्दू हितों की रक्षा करके इस विशाल समाज को संगठित नहीं किया जाता तो देश का भविष्य अंधकारमय ही रहेगा। अतः वे अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ हिन्दू महासभा के कार्यक्रमों को सफल बनाने में जुट गए। १९३१ में वे केन्द्रीय असेम्बली के लिए चुन लिये गए। १९३४ में अजमेर में आयोजित हिन्दू महासभा के अधिवेशन के अध्यक्ष पद के लिए भाईजी को चुना गया। इस पद से अपना भाषण देते हुए उन्होंने देश की राजनैतिक परिस्थिति का लेखा जोखा किया। हिन्दू महासभा को सुदृढ़ बनाने के लिए समस्त देश का भ्रमण किया। १९३५ में महासभा की अध्यक्षता के लिए जब बर्मा के बौद्ध भिक्षु उत्तम को चुना गया तो यह सिद्ध हो गया कि हिन्दू महासभा केवल उच्च वर्गों के हिन्दुओं का ही प्रतिनिधित्व नहीं करती, अपितु इसमें बौद्ध, जैन, सिख आदि उन सभी सम्प्रदायों का ख्याल है जो हिन्दू नाम को व्यापक अर्थ में स्वीकार कर रहे हैं तथा जिनकी आर्य संस्कृति में आस्था है।

१९३७ में जब वीर सावरकर को काला पानी से रिहाई मिली तो उन्हें भी हिन्दू महासभा में आने के लिए कहा गया। यद्यपि पं. नेहरू और राजगोपालाचार्य आदि नेताओं ने सावरकर को कांग्रेस में सम्मिलित होने का आग्रह किया था, किन्तु हिन्दुवादी विचारधारा के पोषक और प्रचारक सावरकर के लिए हिन्दू महासभा में प्रविष्ट हो जाने पर भाईजी को दुगुना बल मिल गया। वे अपनी विचारधारा का प्राणपण से प्रचार करने लगे। इसी बीच देश की राजनैतिक स्थिति में अनेक परिवर्तन आए। अन्ततः १५ अगस्त को देश को अधूरी आजादी मिली। इस समय तक भाईजी भी शारीरिक और मानसिक दृष्टि से बहुत क्षीण और दुर्बल हो गए थे। ८ दिसम्बर १९४७ को उनका निधन हो गया। उन्होंने अविभाजित भारत की स्वतंत्रता की आशा की थी, जो सफल नहीं हुई।

पता : ८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर

कविता

“आप अपनी जिन्दगी से प्यार कीजिये”

अधिक नहीं आप थोड़ा ही कीजिये

आप अपनी जिन्दगी से प्यार कीजिये

सूखे पतझड़ के हवा हो गये

भाव प्रकृति के सारे वासन्त हो गये

सरसों ने धरती पे पीले बिस्तर बिछाये

धरती के फूल शबनम से नहा के हैं आये

वासन्त सा इस जिन्दगी को निखार दीजिये

आप अपनी

खुशबू की तरह हर हृदय में फैल जाइये

अपने व्यवहार से सबको आप अपना बनाइये

खुशियां हर हृदय को साथी सदा बांटते रहे

दुखों की खाई स्नेह से सदा पाटते रहे

वासन्ती शांति मन को भी करार दीजिये

आप अपनी

आओ विचारे सारे साथी मिल के बैठ के

क्या मिलेगा यह बता अकड़ के ऐंठ के

नम्र और हसीन जिन्दगी की शाख हो

स्नेह और प्यार जगे सेवा भाव साथ हो

मान पाने के लिये आप सत्कार कीजिये

आप अपनी

भारत माँ की गोद में खुशी है वसन्त है

हमारी कामना का नहीं होता अन्त है

‘मोहन’ सारे पाते हैं माँ के भण्डार से

वंचित कोई रहता नहीं माँ के दुलार से

मन से सदा माँ को नमस्कार कीजिये

आप अपनी जिन्दगी से प्यार कीजिये ॥

रचयिता- मोहनलाल चड्ढा,

पता - एचआईजी-१७३, हुडको, भिलाई





बलिदान गाथा

जगताराम आर्य

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व कीर्तिरस्य स जीवति

अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल

१६ दिसंबर सन् १९२७ ई. सोमवार प्रातः साढ़े छः बजे गोरखपुर जेल से फांसी के तख्ते की ओर जाते हुए शहीद कह उठा। “मालिक तेरी रजा और तू ही तू रहे, बाकी न मैं रहूँ न ही मेरी आरजू रहे। जब तक कि तन में जान, रंगों में लहू रहे तेरा ही जिक्र या तेरी ही आरजू रहे।” तत्पश्चात् शहीद ने अपनी अंतिम इच्छा प्रकट की— “मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूँ।”

इसी प्रकार १६ दिसंबर १९२७ को उन्होंने लिखा : “हे ईश ! भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो, कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।” यह शहीद थे पं. रामप्रसाद बिस्मिल। वे इन्हीं शब्दों को गुनगुनाते हुए फांसी पर चढ़ गए देश के चरणों पर उत्सर्ग हो गए। वे सच्चे देशभक्त थे, साहसी थे, आर्यवीर थे। वे देश के चरणों पर बलिदान होने के लिए एक तारे की भांति उदित हुए थे। एक तारे की भांति ही ये टूट गए। उनकी उदय और अस्त की कहानी एक मंत्र की तरह प्रेरक है, प्रेरणादायक है। सुगम आएंगे और चले जाएंगे पर उनके बलिदान की गाथा सदा प्रेरणा देती रहेगी, सदा एक पवित्र मंत्र की तरह रंगों में शांति का संचार करती रहेगी।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म २१ जून १८९७ को पं. मुरलीधर तिवारी (शाहजहांपुर निवासी) के यहाँ हुआ था। मुरलीधर ऊँचे डीलडौल के व्यक्ति थे। घर की स्थिति सामान्य थी। वे बड़े साहस और धैर्य के साथ अपनी गृहस्थी का संचालन करते थे। बिस्मिल जी की प्रारंभिक शिक्षा उर्दू में सम्पन्न हुई। उन्हें एक मौलवी साहब पढ़ाया करते थे। पर उनका मन पढ़ने लिखने में बिल्कुल नहीं लगता था। वे बड़े उदंड थे। न स्वयं पढ़ते, न दूसरों लड़कों को पढ़ने देते थे। ज्यों-ज्यों वे बड़े होते गए, उनकी उदंडता भी बढ़ती ही गई। कभी-कभी अपनी बुरी आदतों के कारण

उन्हें अपने पिता के द्वारा अधिक दंडित भी होना पड़ता था। पर संयोग की बात, एक दिन बिस्मिल जी के गांव में आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता सोमदेव जी का आगमन हुआ। बिस्मिल जी उनके सम्पर्क में आए, उनसे प्रभावित हुए और उनके पास आने लगे। सोमदेव जी के कारण बिस्मिल जी के जीवन कायापलट हो गई। वे बुरी आदतों को छोड़कर ब्रह्मचर्यव्रत धारण करने लगे, प्राणायाम करने लगे। आर्यसमाज विद्वानों के उपदेश सुनने लगे। आर्यसमाज मंदिर में जाकर यज्ञ और हवन आदि करने लगे। ऋषि दयानन्द के लिखे हुए अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने लगे। इससे बिस्मिल जी के शरीर और हृदय, दोनों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। प्राणायाम के द्वारा उनका शरीर सुगठित हो गया। उनके शरीर के अंग-अंग में स्फूर्ति का सागर उमड़ने लगा। उन्होंने घुड़सवारी, तैराकी, और साइकिल चलाने में अनोखी दक्षता प्राप्त की। दौड़ने और पैदल चलने में वे बड़े तेज थे। साठ-साठ मील तक पैदल चले जाते थे, पर उनमें नाममात्र की भी थकावट नहीं पैदा होती थी। शरीर की ही भांति उनका हृदय भी अधिक बलवान हो गया था। ऋषि दयानन्द की देशभक्ति का बिस्मिल जी पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। वे देश की बातें सोचने लगे। देश के लिए उनके हृदय में भक्ति पैदा हो गई। वे देशभक्तों के चरित्र पढ़ने लगे, देशप्रेम से भरी हुई कविताओं का पाठ करने लगे। वे जब कविताओं का सस्वर पाठ करने लगते, तो वातावरण में एक रस सा पैदा हो जाता था। बिस्मिल जी को ऊँची शिक्षा प्राप्त करने का सुयोग नहीं प्राप्त हो सका था। शिक्षा के नाते उन्होंने सामान्य रूप से उर्दू और अंग्रेजी पढ़ी थी। उन्होंने एन्ट्रेस की परीक्षा तो नहीं पास की थी, पर एन्ट्रेस तक शिक्षा अवश्य प्राप्त की थी। उन्होंने स्वतंत्र रूप से पढ़कर बाद में उर्दू और

अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उर्दू में वे शायरी करते थे। उनकी कविताएँ बड़ी प्रभावपूर्ण और जोशीली होती थी। वे एक अच्छे वक्ता और सुलेखक भी थे। उन्होंने कई पुस्तकों की रचना भी की। उर्दू और अंग्रेजी के अतिरिक्त उन्हें बंगला और हिन्दी का भी ज्ञान था।



ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र और सोमदेव जी की प्रेरणा से ही बिस्मिल जी के हृदय में देश प्रेम का अंकुर फूटा। जिन दिनों वे नवीं कक्षा में पढ़ रहे थे, उन्हें स्वयंसेवक के रूप में सेवा समिति में काम करने का अवसर मिला। सेवा समिति कार्य करते हुए उनकी दृष्टि परसेवा की ओर आकर्षित हुई। परसेवा से और भी अधिक आगे बढ़कर उनकी दृष्टि देश सेवा पर गई। देश की गुलामी से उनके हृदय में दर्द पैदा होने लगे। वे हृदय से यह अनुभव करने लगे कि व्यक्ति का दुःख देश का दुःख अंग्रेज सरकार के कारण है। फलतः वे अंग्रेज सरकार को विनष्ट करने के सम्बन्ध में सोच विचार करने लगे। इन्हीं दिनों बिस्मिल जी को स्वर्गीय गेदालाल दीक्षित से क्रांतिकारी दल का पता लगा। दीक्षित जी के दल का केन्द्र मैनपुरी था। बिस्मिल जी की अवस्था उन दिनों केवल उन्नीस वर्ष की थी और वे हाई स्कूल में पढ़ रहे थे, पर वे इसी कच्ची उम्र में ही दीक्षित जी के दल में सम्मिलित हो गए। बिस्मिल जी अपनी कर्मठता और लगन से थोड़े ही दिनों में दीक्षित जी के दल के प्रमुख सदस्यों में से बन गए। बंगाल के क्रांतिकारियों से भी उन्होंने संपर्क स्थापित किया। वे बड़ी लगन से अपने दल के लिए अपने दल के साथियों के लिए अस्त्र-शस्त्र और धन एकत्र करने लगे। उनके अस्त्र-शस्त्र और धन संग्रह के संबंध में कई रोचक और साहसपूर्ण कहानियाँ कही जाती हैं।

बिस्मिल जी डकैतियों के द्वारा दल के लिए धन एकत्र किया करते थे। वे सरकारी खजानों, डाकखानों और बैंकों को लूटने के लिए भी प्रोत्साहन दिया करते थे। दल के लिए धन संग्रह करने के उद्देश्य से ही उन्होंने १९२५ ई. में ९ अगस्त को काकौरी में ट्रेन डकैती करके अपने

अद्भुत साहस का परिचय दिया था। काकारो लखनऊ के पास एक स्टेशन है। १९२५ ई. की ९ अगस्त का दिन था। संध्या के लगभग ८ बजे रहे थे। ट्रेन हरदोई से लखनऊ जा रही थी। उस पर सरकारी खजाना था बिस्मिल जी

को पहले से ही यह बात ज्ञात हो चुकी थी। उन्होंने पहले से ही अपने साथियों से विचार-विमर्श करके उस सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई थी। यद्यपि यह सारा काम बड़ी चतुराई और होशियारी के साथ किया गया, फिर भी सरकारी जासूस विभाग को पता चल ही गया। परिणामस्वरूप गिरफ्तारियाँ की जाने लगीं। एक-एक करके ट्रेन डकैती में सम्मिलित क्रांतिकारी बन्दी बनाए जाने लगे। बिस्मिल जी भी २५ दिसंबर को गिरफ्तार कर लिए गए।

बिस्मिल जी और उनके साथियों पर मुकदमा चलाया गया। लगभग दो वर्ष तक मुकदमा चला, पर कुछ फल न निकला। बिस्मिल जी को फांसी की सजा सुनाई गई। फांसी के पहले बिस्मिल जी के माता-पिता जेल में उनसे मिलने के लिए गए। माता-पिता के साथ उनका छोटा भाई भी था। बिस्मिल जी ने जब मां को देखा, तो उनकी आंखें डबडबा गईं। अश्रु बूंदें रह-रहकर आंखों से टपकने लगीं। बिस्मिल जी की आंखों में अश्रु बूंदें देखकर उनकी माता जी बोल उठीं - मैं समझती थी, तुमने अपने आप पर विजय प्राप्त की है, किन्तु यहां तो तुम्हारी कुछ और ही दशा है। जीवनपर्यन्त देश के लिए आंसू बहाकर अब अंतिम समय में मेरे लिए रोने बैठे हो। इस कायरता से क्या होगा? तुम्हें वीर की तरह हंसते हुए प्राण देते देखकर मैं अपने आपको धन्य समझूंगी। मुझे गर्व है कि इस गए बीते जमाने में मेरा पुत्र देश की वेदी पर अपने प्राण दे रहा है। मेरा काम तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा करना था। उसके बाद तुम देश की चीज बन गए थे, सो उसके काम आ गए। मुझे जरा भी दुःख नहीं है। बिस्मिल जी अपनी मां के ओजस्वी शब्दों को सुनकर चुप न रह सके। वे आंसू पोछते हुए बोल उठे - "माँ, तुम मेरी मां हो। तुम मेरी जननी होकर भी नहीं समझ सकी। माँ, मैं मृत्यु से

भयभीत होकर नहीं रो रहा हूँ। जिस प्रकार यदि घी को आग के पास कर दिया जाए तो वह पिघल उठता है उसी प्रकार मां, तुम्हें देखकर मेरी आंखों से कुछ अश्रु बूंदें निकल पड़ी। विश्वास रखो मां, मैं मृत्यु से संतुष्ट हूँ, पूर्णरूप से सन्तुष्ट हूँ।”

गोरखपुर जेल में १९२७ ई. की १९दिसंबर का प्रातःकाल था। बिस्मिल जी तीन बजे ही उठ पड़े। उन्होने

शौचादि से निवृत्त होकर संध्या की हवन यज्ञ किया। फिर वे गुनगुनाते हुए फांसी के तख्ते की ओर चल पड़े। वे गुनगुनाते हुए ही फांसी के फन्दे पर चढ़ गए। आर्यसमाजी होने के नाते उनका अन्तेष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ हुआ। उन्होंने फांसी के तख्ते पर चढ़कर जोर से आवाज ऊँची की - “अंग्रेज सरकार का नाश हो, अंग्रेज सरकार का नाश हो।” ●

हमारी नीति आचार-परम्परा

भारत अति प्राचीन समय से ही विश्व का नैतिक तथा आध्यात्मिक गुरु रहा है। हमारा नैतिक स्वरूप आध्यात्मिक स्वरूप के अधीन है। वर्तमान कर्म का बीज कालान्तर में अंकुरित होता है, यही धारणा हमें अनैतिक कर्मों से बचाए रखती है। हमारे यहां मनीषी महापुरुषों के अवतारों का उद्देश्य संसार को नैतिक शिक्षा से समन्वित करना तथा धर्म की व्यवस्था करना रहा है। जन-जन से परिवार, परिवार से समाज और समाज से देश अथवा राष्ट्र बनता है, जिसका शासक और नियामक एक राजा होता है। राजा भी नैतिक नियमों से बंधा होता है। नीति के प्रादुर्भाव का इतिहास सृष्टि से ही है। मनीषियों से हमें नैतिक आचरण की परम्परा प्राप्त हुई है। मनीषीजनों के अनुभवों का हम यही लाभ उठाए तो हमें हर समस्या का समाधान मिल जाता है। हमारे वेद नैतिक आचरण के मूल स्रोत हैं। हमें उनमें मनुष्य, देश, परिवार तथा समाज के सुखी होने की उच्च विचारधारा का प्रवाह मिलता है, जैसे अनुवतः पितुः - पुत्र-पुत्र पिता का अनुवर्ती। माँ भ्राता भ्रातरं द्विधन् - भाई भाई से द्वेव न रखें। अतिथि देवो भव- अतिथि देवता के समान होता है। अतिथि की सेवा करो। सं गच्छध्वं सं वदध्वम् - मिलकर चलो, मिलकर बोलो। इसी प्रकार वेद की कथाओं में नीति के सुंदर उपदेश व्याप्त हैं। जैसे असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय, सह नावतु सह नो भुनक्तु, धर्मो रक्षति रक्षितः, माताः भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः - भूमि मेरी माता है, मैं इसका पुत्र हूँ। जैसी हितैषी धरोहर धार्ता में प्राप्त है। संस्कृत साहित्य में नैतिक आचरण की मंदाकिनी बहती है। आवश्यकता है इसको पठन-मनन करने की और आचरण में लाने की ताकि हमारी नीति आचार परम्परा कायम रह सके।

- अनिल कुमार आर्य, दुर्ग

**मनसा चिंतयन्पापं कर्मणा नाभियोचयेत् ।
तत्प्राप्नोति फलं तस्येत्येव धर्मविदो विदुः ॥**

मन से पाप-कर्म की चिंता करता हुआ भी मनुष्य कभी उसे कार्यरूप में परिणत करने की इच्छा न करे क्योंकि पाप-कर्म करने पर उसके फल को अवश्य पाता है।

जो व्यक्ति सच्ची भावना से और सच्चे मन से दूसरों के लिए कार्य और उनकी मदद करता है, वह बहुत जल्दी सबका चहेता बन जाता है।

उदर वायु - उदर रोग

- श्री दीनानाथ वर्मा

- (१) भोजनोपरान्त नित्य २५ ग्राम गुड़ खाने से उदरवायु एवं अन्य उदर रोग ठीक होते हैं तथा शरीर में यौवन बना रहता है।
- (२) नीबू के रस में भीगी हुई सौंफ को भोजनोपरांत सेवन करने से पेट का भारीपन (गैस) दूर होता है। खूब भूख लगती है तथा मल भी साफ आता है।
- (३) देशी अजवायन २५० ग्राम और काला नमक ६० ग्राम मिलाकर किसी साफ-स्वच्छ शीशी में डालकर ऊपर से नीबू का रस डाल दें। तदुपरांत इस बोतल को छाया में रख दें। जब नीबू का रस सूख जाए, तब इसमें पुनः नीबू का रस डालें। इस प्रकार सात बार नीबू का रस डालकर दवा को सुरक्षित रख लें। इसको २ ग्राम की मात्रा में भोजनोपरांत खाने से अरुचि नष्ट होकर भूख लगती है।
- (४) जब तक खेतों में अथवा बाजार में बथुआ मिलता रहे, नित्य इसकी सब्जी खाएं। बथुआ का रस, उबला हुआ पानी पिएं। पेट के प्रत्येक प्रकार के रोग-यकृत, तिल्ली, अजीर्ण, गैस, कृमि, दर्द, अर्श (बवासीर) व पथरी आदि रोग ठीक हो जाते हैं।
- (५) ताजे लम्बे बैंगन की सब्जी जब तक मौसम में (बाजार में) बैंगन उपलब्ध रहे, तब तक खाते रहें। इस प्रयोग से गैस की तिल्ली यदि बढ़ी हुई हो, तो उसमें भी आराम होता है।
- (६) प्रतिदिन भोजनोपरांत १० ग्राम गुड़ मुख में डालकर धीरे-धीरे चूसने से मुंह में खट्टा पानी आनी बन्द हो जाता है। अम्ल पित्त के नाश के अतिरिक्त इस प्रयोग से पेट में वायु भी नहीं बनती है।
पेट में गैस बनने की दशा में इस प्रयोग से लाभ होता है, क्योंकि खाना खाने के बाद गुड़

चूसने से यह शरीर का कचड़ा बाहर निकालने में सहायक है। मुंह के छालों से भी इससे आराम होता है। यह प्रयोग हृदय की दुर्बलता और शरीर की शिथिलता में भी उपयोगी है। एक साल पुराना गुड़ अधिक लाभकारी सिद्ध होता है।

नोट :- गुड़ को १ घंटे तक धूप में रखने से (आयुर्वेदीय मतानुसार) उसमें पुराने गुड़ के गुण उत्पन्न हो जाते हैं।

(७) एक नीबू का रस एक गिलास गर्म पानी के साथ रात्रि में सोते समय सेवन करने से प्रातःकाल दस्त खुलकर आता है।

(८) एक भाग चावल में २ भाग मूंग की दाल मिलाकर बनाई गई खिचड़ी में घी मिलाकर खाने से कब्ज दूर होती है।

(९) गेहूँ के आटे को मैदे की छलनी से छान लें और जो चोकर (भूसी) निकले, उसे तबे पर भून लें। उसे इतना भूने की वह लाल हो जाए, लेकिन ध्यान रहे कि यह कच्ची न रहे और जले भी नहीं। फिर इस भुनी हुई चोकर को दूध, शक्कर पानी में डालकर खूब उबालें। तदुपरांत छानकर पिएं। इसका स्वाद काफी (कहवा) के समान होगा, जिससे तुरंत स्फूर्ति प्राप्त होगी, क्योंकि इसमें, प्रोटीन अधिक है। इस प्रयोग से कब्ज, गैस रोग, ब्लड-प्रेसर व हार्ट अटैक में लाभ मिलता है। यह शारीरिक कमजोरी दूर करने का लाजवाब टॉनिक है।

(१०) गर्म दूध के साथ इसबगोल की भूसी या गुलाब का गुलकंद लेने से शौच खुलकर आता है। बवासीर के लिए भी लाभकारी है।

पता: मकान नं. डी-119/1, टैगोर नगर, रायपुर - 492001 (छ.ग.)

आर्य जगत् के गौरव - प्रो. महावीर अग्रवाल, राष्ट्रपति सम्मान के लिए चयनित

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य एवं कुलपति, कुलसचिव एवं उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी के पूर्व उपाध्यक्ष प्रो. महावीर अग्रवाल को २०१८ के राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए चयनित किये जाने के समाचार से सम्पूर्ण देश के संस्कृत जगत् में प्रसन्नता की लहर व्याप्त हो गई।

वर्तमान में पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार में प्रति-कुलपति के पद पर कार्य करते हुए संस्कृत, संस्कृति, योग एवं आयुर्वेद के उन्नयन में सर्वात्मना समर्पित प्रो. महावीर अग्रवाल का बहुआयामी व्यक्तित्व अनेक उपलब्धियों से परिपूर्ण है। ४४ वर्ष तक उच्च शिक्षा में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए आपने अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त किये हैं। वेद एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों में अटूट निष्ठा रखने वाले वैदिक विद्वान् प्रो. महावीर का समन्वयवादी चिन्तन, विनम्र व्यवहार, अहंकार शून्य आचरण सबको आपसे जोड़ देता है। संस्कृत, हिन्दी के वाग्मी प्रो. अग्रवाल की सैकड़ों संस्कृत वार्ताएँ आकाशवाणी केन्द्रों से तथा वेद, उपनिषद्, गीता आदि विषयों पर अनेक प्रवचन दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर प्रसारित हुए हैं।

आपके निर्देशन में लगभग ७५ शोधार्थियों ने शोध कार्य पूर्णकर पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त की है। आपने न केवल देश के विभिन्न राज्यों और विश्वविद्यालयों में अपितु अमेरिका, इंग्लैण्ड, थाईलैण्ड, नेपाल आदि देशों में भी अन्तर्राष्ट्रीय शोध, संगोष्ठियों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। भारत के शताधिक विश्वविद्यालयों में आपको ससम्मान विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया जाता है। महाराष्ट्र राज्य के

एक बहुत छोटे से गांव में प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण कर, शिक्षा जगत् में ऐसा सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने वाले महामहोपध्याय एवं उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय में कार्य करते हुए अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलनों का आयोजन किया।

आप प्राच्य विद्याओं के सबसे बड़े और प्राचीनतम् संगठन अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन के अध्यक्ष पद को भी विभूषित कर चुके हैं। ऐसे मनीषी सरस्वती पुत्र को राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान किये जाने की घोषणा से देवभूमि उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा एवं अन्य राज्यों के संस्कृतानुरागी जन अत्यन्त प्रसन्न हैं। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रो. महावीर अग्रवाल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

- सम्पादक

गुरुकुल का नवम वार्षिकोत्सव

दि. २६, २७ व २८ जन. १९

गुरुकुल हरिपुर का नवम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव आगामी २६, २७ एवं २८ जनवरी २०१९ को अनेक पूज्य साधु-सन्त, महात्मा, अतिथियों की उपस्थिति एवं गुरुकुल के सभी सम्माननीय आचार्यों के सान्निध्य में गुरुकुल में अध्ययनरत ब्रह्मचारियों के विविध कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। आप सभी आर्यजन सादर आमंत्रित हैं।



दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान एवं मंत्री पद पर पुनर्निर्वाचित होने पर
श्री धर्मपाल आर्य एवं श्री विनय आर्य जी को
 छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं प्रदेश के समस्त आर्यजनों की ओर से
हार्दिक शुभकामनाएँ

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा। पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाउन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाउन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

महासम्मेलन सफल बनाने में हमारे मार्गदर्शक, प्रेरक एवं विशिष्ट सहयोगी महानुभाव



महेश चतुर्वेदी जी
प्रधानसचिव



आचार्य आनंद जी
माननीय राज्यपाल द्वि.



श्री रमेश प्रसाद जी
माननीय राज्यपाल त्रिभुवन



श्री. महेशसिंह जी
माननीय, राज्यपाल



महेशी सुमधरायन साहू जी
संसद सदस्य (लोक सभा)



श्री. आनंद कुमार श्रीहर्ष जी
संसाधन, उद्योग, श्रम



श्री मोहन आर्य जी
भेषज, ज. व. व. ए. ए. ए.



महेश मनोहर सिंह जी
श्री गेहलोती परिवार



महेश राजीव गुजरी जी
निदेशक, एम. डी. एम.



श्री जीत प्रकाश जीवन् जी
ज्योतिष, माननीय

भारतीय प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के माननीय अधिकारी जिनका मिला अथक सहयोग



श. महेश जी
प्रधान, आ. प्र. म. उत्तरांचल



श्री महेश जी लाल सिंह जी
प्रधान, आ. प्र. म. गुजरात



श्री सुरेश जी जी
प्रधान, आ. प्र. म. राजस्थान



श्री महेश जी जी
प्रधान, आ. प्र. म. बिहार



श्री महेश जी जी
प्रधान, आ. प्र. म. कर्नाटक



श्री. महेश जी जी
प्रधान, आ. प्र. म. उत्तराखण्ड



श्री महेश जी जी
प्रधान, आ. प्र. म. मध्यप्रदेश



आचार्य महेश जी जी
प्रधान, आ. प्र. म. म. प्र. वि. प्र.



श्री महेश जी जी
प्रधान, आ. प्र. म. जम्मू, कश्मीर



श्री महेश जी जी
प्रधान, आ. प्र. म. महाराष्ट्र



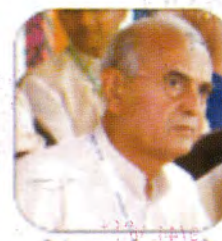
आचार्य महेश जी जी
प्रधान, आ. प्र. म. छत्तीसगढ़



श्री महेश जी जी
प्रधान, म. भारतीय आ. प्र. म.



श्री महेश जी जी
प्रधान, आ. प्र. म. पंजाब



श्री महेश जी जी
प्रधान, आ. प्र. म. गुजरात



श्री महेश जी जी
संयोजक, आ. प्र. म. तेलंगाना



के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।



मसाले
असली मसाले
सच-सच



ESTD. 1919

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

प्रेषक : "अनिदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001